ऋग्वेद

ओ३म्

यजुर्वेद

पवमान

(मासिक)

माघ-फाल्गुन | विक्रम 2072
वर्ष : 28 | फरवरी 2016
अंक : 2

ऋषि बोधोत्सव विशेषांक

मुद्रकः सरस्वती प्रेस, देहरादून | मूल्यः ₹ 15 | वजनः 50 ग्राम

वैदिक साधन आश्रम तपोवन
नालापानी, देहरादून

सामवेद

अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

नालापानी, देहरादून - 248008, दूरभाष: 0135-2787001

ग्रीष्मोत्सव (अथर्ववेद यज्ञ एवं योग साधना शिविर)
बैशाख शुक्ल पक्ष पंचमी से बैशाख शुक्ल पक्ष नवमी विक्रमी सम्वत् 2073 तक
तदनुसार बुधवार 11 मई से रविवार 15 मई 2016 तक मनाया जायेगा।

यज्ञ के ब्रह्मा एवं योग साधना निदेशक : स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी महाराज

प्रवचनकर्ता	:	आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य
वेद पाठ	:	महर्षि दयानन्द आर्ष ज्योर्तिमठ गुरूकुल पौंधा देहरादून के ब्रह्मचारियों द्वारा
यज्ञ एवं अन्य कार्यक्रमों के संयोजक	:	श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी
भजनोपदेशक	:	डॉ. कैलाश कर्मठ
समापन समारोह के मुख्य अतिथि	:	आचार्य डॉ. देवव्रत जी, महामहिम राज्यपाल हिमाचल प्रदेश

बुधवार 11 मई से रविवार 15 मई 2016 तक प्रतिदिन

योग साधना	:	प्रात: 5.00 बजे से 6.00 बजे तक
संध्या एवं यज्ञ	:	प्रात: 6.30 बजे से 8.30 बजे तक
भजन एवं प्रवचन	:	प्रात: 10.00 बजे से 12.00 बजे तक
यज्ञ एवं संध्या	:	सायं 3.30 बजे से 6.00 बजे तक
भजन एवं प्रवचन	:	रात्रि 7.30 बजे से 9.30 बजे तक

ध्वजारोहण	- बुधवार 11 मई 2016 को प्रात: 9:00 बजे।
गायत्री यज्ञ	- बुधवार 11 मई 2016 को प्रात: 10 से 12 बजे तक
युवा सम्मेलन	- गुरूवार 12 मई 2016 को प्रात: 10:00 बजे से 1:00 बजे तक
उद्बोधन	- आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य एवं आचार्य डॉ. धनन्जय जी
महिला सम्मेलन	- शुक्रवार 13 मई 2016 को प्रात: 10:00 बजे से 1:00 बजे तक
संयोजिका	- श्रीमती सन्तोष रहेजा जी (दिल्ली)
उद्बोधन	- डॉ. अन्नपूर्णा, डॉ. सुखदा सोलंकी, श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा एवं श्रीमती सरोज आर्या जी आदि
शोभायात्रा	- शनिवार 14 मई 2016 को प्रात: 10 बजे तपोभूमि के लिये शोभायात्रा जायेगी
संयोजक	- श्री मंजीत सिंह जी
भजन संध्या	- शनिवार 14 मई 2016 को रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक
भजनोपदेशक	- डॉ. कैलाश कर्मठ एवं श्रीमती मीनाक्षी पंवार
पूर्णाहुति एवं ऋषिलंगर	- रविवार 15 मई 2016 को यज्ञ के उपरांत महामहिम राज्यपाल द्वारा नवनिर्मित सत्संग भवन का उद्घाटन किया जायेगा तत्पश्चात् भजन, प्रवचन एवं ऋषिलंगर।

नोट : यज्ञ के अतिरिक्त समस्त कार्यक्रम महात्मा प्रभु आश्रित सत्संग भवन में सम्पन्न होंगे।

बस सेवा: रेलवे स्टेशन से तपोवन आश्रम नालापानी के लिए हर समय बस उपलब्ध रहती है।

सप्रेम आमंत्रण

आदरणीय महोदय/महोदया, स्व. बाबा गुरुमुख सिंह जी एवं पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती जी, स्वामी योगेश्वरानन्द जी परमहंस एवं महात्मा प्रभु आश्रित जी ने तपोवन आश्रम को साधना के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान माना था। आपसे प्रार्थना है कि परिवार व ईष्ट मित्रों सहित यज्ञ एवं सत्संग में उपस्थित होकर हमें कृतार्थ करें एवं अपने-अपने समाज/धार्मिक सत्संगों से यह निमंत्रण हमारी ओर से निवेदित करने की कृपा करें। आपके उदार सहयोग के लिए अग्रिम धन्यवाद।

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री, ई. प्रेम प्रकाश शर्मा, सन्तोष रहेजा, सुधीर कुमार माटा, मंजीत सिंह, विक्रम बावा, योगेश मुंजाल, डॉ. शशि वर्मा, मनीष बावा, महेन्द्र सिंह चौहान, अशोक वर्मा, विजय कुमार, रामभज मदान।

एवं समस्त सदस्य, वैदिक साधन आश्रम सोसायटी

ओ३म्

पवमान

वर्ष–28 अंक–2

माघ–फाल्गुन 2072 विक्रमी जनवरी 2016

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,116 दयानन्दाब्द : 192

★

–: संरक्षक :–

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

★

–: अध्यक्ष :–

श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री

मो. : 09810033799

★

–: सचिव :–

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–

स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–

कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

मो. : 08755696028

★

–: सम्पादक मण्डल :–

अवैतनिक

आचार्य आशीष दर्शनाचार्य

मनमोहन कुमार आर्य

★

–: कार्यालय :–

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून–248008

दूरभाष : 0135–2787001

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	3
ऋषि–ऋण	स्वामी स्वतन्त्रान्द महाराज	4
याज्ञिक परम्परा में महर्षि दयानन्द....	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	5
'सच्चे ऋषि, संसार के सर्वोच्च गुरु...	मनमोहन कुमार आर्य	9
ऋषिवर देव दयानन्द की समाज...	ब्र. शिवदेव आर्य	13
समाज सुधारक महर्षि दयानन्द	डा० सुधीर कुमार आर्य	15
स्वास्थ्य के लिये जरूरी है कुलथी...		16
वर्तमान जन्म के पापों का फल नाश	महात्मा प्रभु आश्रित महाराज	17
व्यवहार कैसा हो?	श्री ओमप्रकाश अग्रवाल	18
जीवनबोध का पर्व शिवरात्रि	डा० महेश विद्यालंकार	19
महर्षि का मन्तव्य	डा० रविदत्त आचार्य	21
ईश्वर के स्वरूप को जानो	श्री ओमप्रकाश अग्रवाल	24
महर्षि की देश वन्दना	गजानन्द आर्य	25
चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ...	स्वामी चित्तेश्वरानन्द महाराज	28
सत्यार्थप्रकाश स्वाध्याय शिविर	आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य	29
दानदाताओं की सूची		30
'श्रद्धांजलि'		31

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. "वैदिक साधन आश्रम"	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहरादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1. कलर्ड फुल पेज — रु. 5000/– प्रति माह
2. ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज — रु. 2000/– प्रति माह
3. ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज — रु. 1000/– प्रति माह

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

महर्षि दयानन्द सरस्वती

अप्रतिम योगी और चिन्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने महात्मा विरजानन्द से ढाई वर्ष तक अष्टाध्यायी, महाभाष्य और वेदान्त सूत्र आदि की शिक्षा ग्रहण की। जब शिक्षा पूर्ण करने के बाद विदा की बेला आई तो दयानन्द ने कुछ लौंग गुरुदक्षिणा के रूप में गुरु के सम्मुख रखकर चरण स्पर्श करते हुए देशाटन की आज्ञा मांगी। दयानन्द से गुरु को दक्षिणा के रूप में कोई भौतिक वस्तु अपेक्षित न थी। यह गुरु तो अपने शिष्य से कुछ और ही चाहता था। इस पर दयानन्द ने निवेदन किया– ''गुरुदेव! यह सेवक अपने मन सहित अपने तन को आपके चरणों में अर्पण करता है। आप जो भी आदेश देंगे, उसे मैं आजीवन निभाऊँगा, कृपया आज्ञा दें।'' गुरु विरजानन्द ने अपने प्रिय शिष्य से कहा, ''वत्स, भारत के दीन–हीन जनों का उद्धार करो। कुरीतियों का निवारण करो। आर्ष शिक्षा पद्धति प्रचलित करके वैदिक ग्रन्थों के पठन–पाठन में लोगों को प्रवृत्तिशील बनाओ। अन्य किसी सांसारिक वस्तु की हमें चाह नहीं है।'' शिष्य दयानन्द ने गुरु के वचनों को सुन कर स्वीकार किया और कहा, ''श्री महाराज, देखेंगे कि आपका प्रिय शिष्य इन आज्ञाओं का किस प्रकार प्राणप्रण से पालन करता है।''

इसके बाद ऋषि दयानन्द ने अपना सारा जीवन गुरु को दिए गए वचनों का पालन करने में अर्पित कर दिया। उनका चिन्तन शुद्ध वैदिक था। उन्होंने भ्रम, अंधविश्वास व कुरीतियों को दूर करने का सदैव प्रयास किया। उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' जैसा अमर ग्रन्थ लिख कर अनेक रूढ़ियों और भ्रांतियों को दूर किया। इसके अतिरिक्त ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिविनय, संस्कारविधि, व्यवहारभानु आदि अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया और यजुर्वेद का सम्पूर्ण भाष्य करने के बाद ऋग्वेद के सातवें मण्डल के इकसठवें सूक्त के दूसरे मंत्र तक का भाष्य किया। महर्षि ने वेदार्थ पद्धति में अपना अपूर्व योगदान दिया है। दयानन्द द्वारा वेदार्थ की अध्यात्म, अधिदैवत, अधियज्ञ और अधिभूत सम्बन्धी पद्धतियां अपनाई गईं जो पूर्व के आचार्यों को भी मान्य थीं। महर्षि ने ऋ० भा०भू० के प्रतिज्ञाविषय में लिखा है कि जिन मन्त्रों के श्लेश आदि अलंकार से पारमार्थिक और व्यवहारिक, दोनों प्रकार के अर्थ सम्भव हैं, उन मन्त्रों के वे अपने वेदभाष्य में दोनों अर्थ करेंगे। अपनी इस प्रतिज्ञा का पालन करते हुए उन्होंने वेद मन्त्रों के दोनों प्रकार के अर्थ किए हैं। उनके मन्त्रों के अर्थ अध्यात्मिक, अधिदैवत या अधियज्ञ पद्धति के हैं। महर्षि ने याज्ञिक पद्धति को अप्रति योगदान दिया है, जिसके बारे में इसी अंक में विस्तृत लेख दिया गया है। स्त्री शिक्षा पर सदैव बल दिया तथा बाल विवाह का घोर विरोध किया। प्राचीन आर्ष गुरुकुल प्रणाली और शिक्षा पद्धति का गहन अध्ययन व विश्लेषण कर ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास, इन चारों आश्रमों के पालन पर बल दिया। उनका सम्पूर्ण जीवन व कृतित्व आध्यात्मिकता से परिपूर्ण था। राष्ट्र प्रेम उनके लिए सर्वोपरि था। अपनी पुस्तक आर्याभिविनय में उन्होंने लिखा था, ''अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी भी शासन न करे। हम कभी अधीन न हों।'' इस प्रकार वह उन व्यक्तियों में से थे, जिन्होंने सर्वप्रथम भारतीय स्वातंत्र्य की कल्पना की थी। **बोधोत्सव** हमें कर्तव्य पालन के लिए प्रेरित करता है। यह ऋषि–बोधांक महर्षि को कोटिशः नमन करते हुए समर्पित करते हैं।

कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

❀ वेदामृत ❀

प्रभु हमारे भीतर वैदिक सत्य को जाग्रत् कर दें

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि।
स इद् देवेषु गच्छति।।

–ऋ० 1। 1। 4

ऋषिः मधुच्छन्दाः।। देवता– अग्निः।। छन्दः– गायत्री।।

विनय– हम कई शुभ अभिलाषाओं से कुछ यज्ञों को प्रारम्भ करते हैं और चाहते हैं कि यज्ञ सफल हो जाएँ, परन्तु हे देवों के देव अग्निदेव! कोई भी यज्ञ तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक उस यज्ञ में तुम पूरी तरह न व्याप रहे हो, चूँकि जगत् में तुम्हारे अटल नियमों व तुम्हारी दिव्य–शक्तियों के, अर्थात् देवों के द्वारा ही सब–कुछ सम्पन्न होता है। तुम्हारे बिना हमारा कोई यज्ञ कैसे सफल हो सकता है? और जिस यज्ञ में तुम व्याप्त हो वह यज्ञ अध्वर (ध्वर अर्थात् कुटिलता और हिंसा से रहित) तो अवश्य होना चाहिए, पर जब हम यज्ञ प्रारम्भ करते हैं, कोई शुभ कर्म करते हैं, किसी संघ–संघटन में लगते हैं, परोपकार का कार्य करने लगते हैं तो मोहवश तुम्हें भूल जाते हैं। उसकी जल्दी सफलता के लिये हिंसा और कुटिलता से भी काम लेने को उतारु हो जाते हैं। तभी तुम्हारा हाथ हमारे ऊपर से उठ जाता है। ऐसा यज्ञ तुम्हारे देवों को स्वीकृत नहीं होता, उन्हें नहीं पहुँचता–सफल नहीं होता। हे प्रभो! अब जब कभी हम निर्बलता के वश अपने यज्ञों में कुटिलता व हिंसा का प्रवेश करने लगे और तुझे भूल जाएँ तो हे प्रकाशक देव! हमारे अन्तरात्मा में एक बार इस वैदिक सत्य को जगा देना; हमारा अन्तरात्मा बोल उठे कि ''हे अग्ने! जिस कुटिलता व हिंसा–रहित यज्ञ को तुम सब ओर से घेर लेते हो, व्याप लेते हो, केवल यही यज्ञ देवों में पहुँचता है, अर्थात् दिव्य फल लाता है–सफल होता है।' सचमुच तुम्हें भुलाकर, तुम्हें हटाकर यदि किसी संगठन–शक्ति द्वारा कुटिलता व हिंसा के जोर पर कुछ करना चाहेंगे तो चाहे कितना घोर उद्योग कर लें हमें कभी सफलता न मिलेगी।

शब्दार्थ–अग्ने=हे परमात्मन्! **त्वम्**=तुम **यम्**=जिस **अध्वरं यज्ञम्**=कुटिलता तथा हिंसा से रहित यज्ञ को **विश्वतः परि भूः असि**=सब ओर से व्याप लेते हो **स इत्**=केवल वह यज्ञ देवेषु **गच्छति**=दिव्य फल लाता है।

ऋषि-ऋण

—स्वामी स्वतन्त्रान्द महाराज

महर्षि दयानन्द जी ने स्वर्गारोहण के समय उदयपुर में अपनी अन्तिम इच्छा लेखबद्ध की थी। उसकी दूसरी धारा का पाठ इस प्रकार हैं।

"वेदोक्त धर्मोपदेश और शिक्षा मण्डली नियत कर के देश देशान्तर और द्वीपान्तर में भेजकर सत्य के ग्रहण और असत्य के त्यागादि में" व्यय करना।

इस लेख द्वारा ऋषि ने देश शब्द से भारतवर्ष और देशान्तर शब्द से अन्य प्रदेश, इसी प्रकार द्वीप द्वीपान्तर शब्द से भारत भिन्न द्वीप, सिंहल द्वीप आदि में वैदिक धर्मप्रचार की इच्छा प्रकट की व आज्ञा दी थी।

उनके स्वर्गारोहण के पश्चात् आर्यसमाजें महर्षि की उत्तराधिकारी थी। इसलिए यह काम उनके जिम्मे था।

मुम्बई के नियमों मे तीसरी धारा का निम्न पाठ है– "इस समाज मे प्रति देश मध्य एक प्रधान समाज होगा और दूसरे शाखा प्रति शाखा समझे जाएंगे।"

इस धारा के अनुसार प्रत्येक प्रान्त मे आर्य प्रतिनिधि सभाएँ बनाई गई जो इन प्रान्तों मे बनी हुई हैं।

पंजाब, उत्तरप्रदेश, बिहार, बंगाल, आसाम, मद्रास, हैदराबाद दक्षिण, राजपूताना, मध्यभारत, मुम्बई प्रथम सिन्ध में भी सभा थी, किन्तु सिन्धु पाकिस्तान मे आ गया, अतः अब वहाँ सभा नही है। इनके अतिरिक्त पूर्वी अफ्रीका, दक्षिण अफ्रीका, मोरिशस, फिजी, ब्रिटिश, गुयाना आदि मे भी सभाएँ हैं।

इनके ऊपर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा है जो इन सभाओं और आर्यसमाजों की व्यवस्था करती है।

आर्यसमाजें, आर्य प्रतिनिधि सभाएँ और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सब प्रचार करती हैं, किन्तु सब का प्रचार भारतवर्ष मे ही है। बाहर अर्थात् देश देशान्तर द्वीप द्वीपान्तर मे किसी का भी नही है। भारतवर्ष से बाहर जो प्रचार हैं यदि उस पर दृष्टि डालें तो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का उसमें कुछ भाग है। अन्यों का नही है अथवा यदि अन्य सभाओं का है तो मै उसमे अनभिज्ञ हूँ। यदि वह मुझे बता दें तो मुझे प्रसन्नता होगी।

आज महर्षि का स्वर्गारोहण दिवस हैं। सब आर्य इस उपलक्ष्य में उत्सव करेंगे। उस उत्सव में महर्षि के गुणों का उनके उपकारों का बखान होगा। उस अवस्था मे मै प्रार्थना करता हूँ। इस उत्सव मे आर्य उनकी आज्ञाओं का भी स्मरण करें और आज्ञाओं मे से देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर मे धर्मप्रचार की आज्ञा का केवल स्मरण ही न करें, इस पर कुछ कार्य भी करें।

मथुरा शताब्दि के समय आर्यों ने इसे स्मरण किया था और धन संग्रह करके सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को सौंपा था। जिसकी वृद्धि वा मूल से उसने देशान्तरों मे प्रचार करना था। उसने एक दो उपदेशक भेजे भी थे, किन्तु वे बाहर अधिक समय ठहर नही सके। और यदि कोई उपदेशक वहाँ है तो वह भारत की किसी सभा द्वारा नही, वह वहाँ वालों द्वारा ही हैं। जैसे पण्डित सत्यपाल जी नैरोबी मे हैं। वे आर्यसमाज नैरोबी के उपदेशक हैं।

इस समय संसार सम्प्रदायों से ऊब रहा है। वह धर्म का इच्छुक है। विज्ञान के सम्मुख और पन्थों का ठहरना असम्भव नही तो कठिन अवश्य हैं। केवल वैदिक धर्म ही है, जो विज्ञान से टक्कर लेकर उसे पराजित कर सकता है। अतः आर्यसमाजों, प्रतिनिधि सभाओं का कर्तव्य है। वह देश देशान्तर द्वीप द्वीपान्तर मे वैदिक धर्म के प्रचार का प्रबन्ध करे। यदि ऐसा न करेंगे तो हम ऋषिऋण से उऋण न होंगे।

याज्ञिक परम्परा में महर्षि दयानन्द का अप्रतिम योगदान

—कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

उवट, महीधर और सायणाचार्य आदि भाष्यकारों का विचार था कि वेद में वर्णित अग्नि, इन्द्र, वरुण, मित्र आदि कल्पित स्वर्ग में रहने वाले देवता हैं। ये देवता पृथ्वी पर दिखाई देने वाले अग्नि, वायु और जलादि पदार्थों के और आकाश में दिखाई देने वाले सूर्य, चन्द्रमा और उषा आदि के अधिष्ठात्री देवता माना जाते हैं। इस प्रकार से इन देवताओं के दो प्रकार के स्वरूप हो जाते हैं। एक स्वरूप अग्नि, जल, वायु आदि के रूप में जड़ पदार्थ के रूप में रहता है और दूसरा स्वरूप अधिष्ठात्री देवता के रूप में मनुष्यों की भांति प्राणधारी व चेतनायुक्त शरीर के रूप में रहता है। उपरोक्त भाष्यकारों के विचार से इन अधिष्ठात्री देवताओं को प्रसन्न करने के लिए यज्ञों में इनसे सम्बन्धित मंत्रों की आहुतियां दी जाती हैं। यह माना जाता है कि ये देवता अदृश्य रूप धारण करके यज्ञ में उपस्थित होकर इन पदार्थों का भक्षण करते हैं। वेदमंत्रों के रूप में अपनी स्तुतियों को सुन कर ये प्रसन्न हो जाते हैं और यजमान की उस कामना जिसके लिए यज्ञ किया गया है, पूर्ण करते हैं। यह भी माना जाता था कि इन यज्ञ—याग करने वालों को मरणोपरान्त स्वर्ग में भी भेज देते थे। स्वर्ग में इन्हें देवताओं की भांति ही सुखभोग प्राप्त होते थे।

महर्षि दयानन्द के अनुसार यज्ञों का वास्तविक स्वरूप—

महर्षि ने आर्योद्देश्यरत्नमाला में यज्ञ की परिभाषा इस प्रकार की है— 'जो अग्निहोत्र से लेके अश्वेमधपर्यन्त, वा जो शिल्पव्यवहार ओर पदार्थविज्ञान है, जो कि जगत् के उपकार के लिए किया जाता है, उसको यज्ञ कहते हैं।

महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित मान्यता—

(१) देवताओं को आहूत करने पर वे आकर हवि का भक्षण नहीं करते हैं—

महर्षि दयानन्द को अधिष्ठात्री देवों की सत्ता स्वीकार्य न थी। उनके द्वारा तत्कालीन यज्ञ परम्परा का घोर विरोध किया गया। अपने वेदभाष्य व सत्यार्थप्रकाश में उन्होंने देवतावाची पदों का सही अर्थ प्रस्तुत किया। सप्तम समुल्लास में देवता की परिभाषा देते हुए महर्षि कहते हैं— **'देवता'** दिव्यगुणों से युक्त होने के कारण कहाते हैं, जैसी कि पृथ्वी। परन्तु इसको कहीं ईश्वर वा उपासनीय नहीं माना है। महर्षि ने अपने वेदभाष्य में अग्नि, वायु आदि मंत्रों के देवतावाची पदों का अर्थ स्वर्ग विशेष में रहने वाले और मनुष्य आकृति के किसी प्राणी के रूप में नहीं किया है अपितु प्रकरण के अनुसार मंत्रों में प्रयुक्त विशेषण के आधार पर जगत् सृष्टा परमात्मा, राष्ट्र का शासक, राज्य कर्मचारी, अध्यापक, उपदेशक, और जगत् प्रत्यक्ष दिखाई देने वाले अग्नि, वायु, जल, आकाश आदि जड़ पदार्थों के रूप में किया है। चारों वेदों का अध्ययन करने पर कहीं पर भी ऐसा उल्लेख नहीं मिलता है कि अग्नि, वायु, जल, आदि जड़ पदार्थों के मनुष्य जैसे शरीरधारी चेतन अधिष्ठात्री देवता भी पाये गये हों। इस प्रकार पारम्परिक यज्ञकर्त्ताओं की यह धारणा कि यज्ञों में मंत्रों के द्वारा देवताओं को आहूत करने पर वे आकर हवि का भक्षण करते हैं और इस कृत्य से प्रसन्न होकर यज्ञकर्त्ता का कल्याण करते हैं, वेद के प्रतिकूल है। महर्षि ने अपने वेदभाष्य से यह सिद्ध कर दिया कि वेद में वर्णित देवताओं का वह स्वरूप नहीं है जो मध्यकाल के विनियोगकारों और सायणाचार्य आदि भाष्यकारों ने वर्णित किया है।

(२) स्वर्ग के सम्बन्ध में महर्षि की अवधारणा—

महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के नवें समुल्लास में स्वर्ग की परिभाषा देते हुए कहा हे कि सुखविशेष स्वर्ग और दुःखविशेष भोग करना नरक कहलाता है। 'स्वः' सुख का नाम है। **'स्वः सुखं गच्छति यस्मिन् स स्वर्गः''अतो विपरीतो दुःखभोगो**

नरक इति' जो सांसारिक सुख है वह सामान्य स्वर्ग और जो परमेश्वर की प्राप्ति से आनन्द है, वही विशेष स्वर्ग कहाता है। महर्षि के अनुसार आकाश के किसी स्थान विशेष में स्वर्गलोक नामक कोई स्थान नहीं है। वे किसी काल्पनिक स्वर्गलोक की सत्ता को स्वीकार नहीं करते हैं। उनके अनुसार सुख–समृद्धि से परिपूर्ण जीवन ही स्वर्ग का जीवन है। सायणादि आचार्यों और मध्ययुगीन याज्ञिकों का यह विचार था कि अग्नि, वायु, इन्द्र आदि देवता वेदमंत्रों के द्वारा आहूत किए जाने पर न केवल हवियों का भक्षण करते थे अपितु प्रसन्न होकर यजमान की कामनाओं को पूर्ण करते थे और उसके मरने के बाद उसे स्वर्गलोक में भेज देते थे। ऐसा कोई स्वर्गलोक आजतक किसी को दिखाई नहीं दिया है। इस प्रकार स्वर्गलोक और उसके विपरीत नरकलोक की कल्पना पूर्णतः असत्य व भ्रामक है, जिसकी महर्षि ने कठोर शब्दों में निन्दा की है।

(३) यज्ञों का वास्तविक प्रयोजन–

महर्षि ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में वेदविषयविचार नामक अध्याय के अन्तर्गत कहते हैं कि सुगन्ध आदियुक्त द्रव्य अग्नि में डाला जाता है, उसके अणु अलग–अलग होके आकाश में रहते हैं, क्योंकि किसी द्रव्य का वस्तुतः अभाव नहीं होता। इससे वह द्रव्य दुर्गन्धादि दोषों का निवारण करने वाला अवश्य होता है। फिर उससे वायु और वृष्टिजल की शुद्धि होने से जगत् का बड़ा उपकार और सुख अवश्य होता है। इस कारण से यज्ञ को करना चाहिए। पुनः इस शंका का निवारण करते हुए कि अतर और पुष्प आदि घरों में रखने से भी वायु और जल की शुद्धि की जा सकती है, महर्षि कहते हैं कि यह कार्य अन्य किसी प्रकार से सिद्ध नहीं हो सकता है, क्योंकि अतर और पुष्पादि का सुगन्ध तो उसी दुर्गन्ध वायु में मिल के रहता है, उस को छेदन करके बाहर नहीं निकाल सकता और न वह ऊपर चढ़ सकता है, क्योंकि उसमें हलकापन नहीं होता है। उसके उसी अवकाश में रहने से बाहर का शुद्ध वायु उस ठिकाने में जा भी नहीं सकता क्योंकि खाली जगह के बिना दूसरे का प्रवेश नहीं हो सकता है। फिर सुगन्ध और दुर्गन्ध वायु के वहीं रहने से रोगनाशादि फल भी नहीं होते हैं। महर्षि ने वेद मंत्रों का भाष्य करते समय कई स्थलों पर यज्ञ करने के प्रयोजन का उल्लेख किया है। कुछ उदाहरण निम्नानुसार हैं–

१. पर्यावरण की शुद्धि–

(१) विद्वानों को ईश्वर की प्रार्थना सहित ऐसा अनुष्ठान करना चाहिए कि जिससे पूर्णविद्या वाले शूरवीर मनुष्य तथा वैसे ही गुणवाली स्त्री, सुख देनेहारे पशु, सभ्य मनुष्य, चाही हुई वर्षा, मीठे फलों से युक्त अन्न और ओषधि हों तथा कामना पूर्ण हो। (यजु० भा० २२.२२)

(२) जो मनुष्य आग में सुगन्धि आदि पदार्थों को होमें, व जल आदि पदार्थों की शुद्धि करने हारे हो, पुण्यात्मा होते हैं और जल की शुद्धि से ही सब पदार्थों की शुद्धि होती है, यह जानना चाहिए। (यजु० भा० २२.२५)

(२) ऋगवेदादिभाष्यभूमिका के वेदविषयविचार अध्याय में महर्षि ने वर्णित किया है कि यज्ञ में जो भाफ उठता है, वह भी वायु और वृष्टि के जल को निर्दोष और सुगन्धित करके सब जगत् को सुख करता है, इससे वह यज्ञ परोकार के लिए ही होता है। महर्षि ने इस सम्बन्ध मे कहा है– ऐतरेय ब्राह्मण का प्रमाण है कि (यज्ञोऽपि त०) जनता नाम जो मनुष्यों का समूह है, उसी के सुख के लिए यज्ञ होता है और संस्कार किये द्रव्यों का होम करने वाला जो विद्वान् मनुष्य है, वह भी आनन्द को प्राप्त होता है, क्योंकि जो मनुष्य जगत् का जितना उपकार करेगा उसको उतना ही ईश्वर की व्यवस्था से सुख प्राप्त होगा। इसलिए अर्थवाद यह है कि अनर्थ दोषों को हटा के जगत् में आनन्द को बढ़ाता है। परन्तु होम के द्रव्यों का उत्तम संस्कार और होम करने वाले मनुष्यों को होम करने की श्रेष्ठ विद्या अवश्य होनी चाहिए। सो इसी प्रकार के यज्ञ करने से सबको उत्तम फल प्राप्त होता है, विशेष करके यज्ञकर्त्ता को, अन्यथा नहीं।

२. अन्तःकरण की शुद्धि और सुख–

(१) जो विद्वानों का सुख, पढ़ने, अन्तःकरण के विशेष ज्ञान तथा वाणी और पवन आदि

पदार्थों की शुद्धि के लिए यज्ञक्रियाओं को करते हैं, वे सुखी होते हैं। (यजु० भा० २२.२०)

(४) यज्ञों में विनियोग–

महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेद के 7वें मंडल के 61वें सूक्त के दूसरे मंत्र तक और माध्यन्दिन शुक्ल यजुर्वेद संहिता के सम्पूर्ण मंत्रों का भाष्य किया। उससे पूर्व उवट, महीधर और सायण इस का भाष्य कर चुके थे। उवट और महीधर के भाष्य मुख्य रूप से कात्यायन–श्रौतसूत्र में विनियोजित कर्मकाण्ड का अनुसरण करते हैं और सायण के भाष्य भी इसी प्रकार से कर्मकाण्डीय परम्परा का अनुसरण करते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती का मत है कि पूर्वकृत विनियोग कोई अटल रेखा नहीं कि उसका अनुसरण करना अनिवार्य हो। सभी आचार्यों ने एक मंत्र का विनियोग एक प्रकार से ही नहीं किया है। उन्होंने एक मंत्र का अन्य प्रकार से भी विनियोग किया है। इससे यह प्रतीत होता है कि मंत्र का पूर्वकृत विनियोगों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। महर्षि ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में पूर्वकृत विनियोगों के सम्बन्ध में कहा है कि जो युक्तिसिद्ध एवं वेदादि प्रमाणों के अनुकूल हो तथा जो मंत्रार्थ के अनुसार हो, वह विनियोग ग्राह्य हो सकता है। महर्षि ने स्वयं को पूर्वकृत विनियोगों के बन्धन में नहीं बांधा और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में ही कहा कि वेद केवल कर्मकाण्ड नहीं है, ज्ञानकाण्ड, उपासनाकाण्ड और विज्ञानकाण्ड परक अर्थ भी किए जाने चाहिएं। उनके भाष्य से वेद में अग्नि, वायु आदि वेदवर्णित देवताओं से अनेक देवों की पूजा की भ्रान्ति नहीं होती है। अन्य भाष्यकारों ने अग्नि, वायु आदि से परमेश्वर से भिन्न अभिमानी देवों का ग्रहण किया है, वहीं महर्षि ने उन्हें, एक परमेश्वर का गुणवाची माना है।

(५) यज्ञों में पशुवध का निरोध–

कर्मकाण्ड के अनुसार यजुर्वेद के प्रथम अध्याय से द्वितीय अध्याय के अठाईसवें मंत्र तक दर्षपूर्णमास यज्ञ है। महीधर की कर्मकाण्डपरक व्याख्या में शष्ठ अध्याय के मंत्र 7 से 22 तक अग्नीशोमीय पशु का प्रयोग आता है। इसमें छाग (बकरे) को देवताओं के लिए काटा जाता है। मंत्र 7 से 19 तक पशु को मारने आदि की विधि का वर्णन किया गया है। मंत्र 20 के अनुसार अध्वर्यु मृत पशु के सब अंगों को स्पर्श करके कहता है कि इस पशु के अंग–अंग में प्राण निहित किया और पशु को कहता है कि तुम जीवित होकर देवताओं के समीप जाओ। उसके बाद प्रतिप्रस्थाता नामक ऋत्विज् पहले से ही पृथक् रखे हुए पशु के पिछले हिस्से को ग्यारह भागों में बांट कर, **''समुद्रं गच्छ स्वाहा''** आदि ग्यारह मंत्राशों से आहुति देते हैं। (मंत्र २१)। अन्त में सब यजमान और ऋत्विज् वरुण से प्रार्थना करते हैं कि वह उन्हें भय से मुक्त करें। (मंत्र २२) महर्षि दयानन्द ने उक्त मंत्र का अर्थ करते हुए कहा है कि यह उस अवसर का है जब बालक के माता–पिता विद्याध्ययनार्थ उसे गुरुकुल में प्रविष्ट कराने लाये हैं। आचार्य अपने इस नवागत शिष्य को सम्बोधित करके कहता है– हे शिष्य! मैं समस्त ऐश्वर्ययुक्त, वेदविद्या प्रकाश करने वाले परमेश्वर के उत्पन्न किये हुए इस जगत् में सूर्य और चन्द्रमा के गुणों से वा पृथिवी के हाथों के समान धारण और आकर्षण गुणों से प्रीति करते हुए तुझको जो ब्रह्मचर्य धर्म के अनुकूल जल और ओषधि हैं, उन जल और गोधूम आदि अन्नादि पदार्थों से नियुक्त करता हूँ। तुझे मेरे समीप रहने के लिए तेरी जननी अनुमोदित करे, सहोदर भाई अनुमोदित करे, मित्र अनुमोदित करे और तेरे सहवासी अनुमोदित करें। अग्नि और सोम के तेज ओर शांति गुणों में प्रीति करते हुए तुझको उन्हीं गुणों से ब्रह्मचर्य के नियम–पालन के लिए अभिशिक्त करता हूँ। बकरे के यज्ञ में बलि करने के सम्बन्ध में माता–पिता, भाई और मित्र अनुमोदित करें, यह सन्दर्भ के प्रतिकूल है और इससे सिद्ध होता है कि इस प्रसंग में यह अर्थ पूर्णतः वास्तविक अर्थ से भिन्न व प्रतिकूल है। इससे यह भी प्रतीत होता है कि वेद में बलात पशु बलि सम्बन्धी प्रसंग डालने का प्रयास किया गया है। इसी प्रकार के प्रसंग अश्वमेध यज्ञ के सम्बन्ध में यजुर्वेद के 22वें से 25वें अध्याय में, पुरुषमेध यज्ञ के सम्बन्ध में पशुबलि परक अर्थ किए गए हैं।

सौजन्य से– APEX ENGINEERS
Gurgaon (Haryana), Mob. : 09810481720

इसमें घोड़े की बलि तथा महिषी के साथ मृत घोडे के सोने के अश्लीलता भरे प्रसंग हैं। कर्मकाण्डियों द्वारा यह माना जाता था कि घोड़ा पुनर्जीवित होकर स्वर्ग चला जाता है। महर्षि दयानन्द अश्वमेध के इस रूप से सहमत नहीं थे और न इसे वेद व शतपथ ब्राह्मण के अनुकूल समझते थे। महर्षि ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में राजप्रजाधर्म में लिखा है कि **'राष्ट्रपालनमेव क्षत्रियाणाम् अश्वमेधाख्यो यज्ञो भवति, नार्श्वं हत्वा तदङ्गानां होमकरणं चेति'** अर्थात् राष्ट्र का पालन करना ही क्षत्रियों का अश्वमेध यज्ञ है, घोड़े को मारकर उसके अंगों को होम करना नहीं। यजुर्वेद के 30 व 31वें अध्याय में भी पुरुषमेध यज्ञपरक वर्णन मिलते हैं। किसी समय इस यज्ञ में पुरुषों को यूपों में बांध कर बलि देने की प्रथा थी। महर्षि दयानन्द ने 30 वें अध्याय में आये पदों का उचित अर्थ करते हुए बताया कि इसमें राजा के कर्तव्य बताते हुए कहा गया है कि अमुक–अमुक गुणों वाले पुरुष या स्त्री को आप राष्ट्र में उत्पन्न कीजिए या नियुक्त कीजिए और अमुक–अमुक दुष्ट आचरण करने वाले पुरुष या स्त्री को आप दूर कर दीजिए। इसी प्रकार कर्मकाण्डानुसार यजुर्वेद के 35वें अध्याय में इन महीधर आदि भाष्यकारों ने पशु–बलि परक अर्थ किए हैं। यजुर्वेद का मंत्र 35. 20 प्रस्तुत है–

वह वपां जातवेदः पितृभ्यो यत्रैनान् वेत्थ निहितान् पराके।

मेदसः कुलया उप तान्त्स्रवन्तु सत्या एशामाशिशः संनमन्तां स्वाहा।।

महीधर ने इस मंत्र का विनियोग चर्बी (वपा) का होम करना माना है। वे कहते हैं कि इस मंत्र से गाय की चर्बी का होम करें। वह मंत्र का अर्थ करते हुए कहते हैं– 'हे जातवेदः अग्ने! तू पितरों के लिए गाय की चर्बी को वहन कर ले जा, जहाँ कि दूर पर निहित उन्हें तू जानता है। चर्बी की नहरें पितरों के पास पहुंचें। दाताओं के मनोरथ भी पूर्ण हों। स्वाहा, सुहुत हो।' इस मंत्र का अर्थ करते हुए महर्षि ने 'वपा' का अर्थ चर्बी न मानते हुए भूमि किया है। उनके अनुसार यह शब्द 'वप' धातु से बना है। जिसमें बीज बोया जाए, वह वपा कहलाती है। इसी प्रकार '**मेदसः कुल्याः**' का अर्थ भी चर्बी की नहरें नहीं है अपितु 'स्निग्ध नहरें' हैं। महर्षि अर्थ करते हैं– 'ज्ञानी जनों को चाहिए कि वे जनक व विद्या–शिक्षा देने वाले श्रेष्ठ पितृजनों से खेती–योग्य भूमि को प्राप्त करें। उसकी सिंचाई आदि के लिए उन्हें जलप्रवाह से युक्त नदी व नहरें निकट प्राप्त हों, जिससे सत्य द्वारा उनकी यथार्थ इच्छाएं फलीभूत हों।

(६) यज्ञ का व्यापक अर्थ– यज्ञ शब्द 'यज्' धातु से निष्पन्न होता है और उसके देवपूजा, संगतीकरण और दान ये तीन अर्थ होते हैं, जो इस शब्द में अन्तर्निहित हैं। तीनों शब्द बहुत अधिक व्यापक अर्थों और भावों की अभिव्यक्ति करते हैं। महर्षि ने अपने समस्त ग्रन्थों और वेदभाष्य में इन शब्दों में अन्तर्निहित व्यापक अर्थों और भावों को यज्ञ के परिप्रेक्ष्य में वर्णित किया है। महर्षि ने केवल होम करने को ही यज्ञ नहीं माना है अपितु कहा है कि मनुष्यों को चाहिए कि संसार के उपकार के लिए जैसे विद्वान् लोग अग्निहोत्र यज्ञ का आचरण करते हैं, वैसे अनुष्ठान करें। (यजु0 १७.५५) महर्षि ने यज्ञ का पठन–पाठनरूप भी हमारे समक्ष रखा है। वे कहते हैं कि जो विद्या की वृद्धि के लिए पठन–पाठन रूप यज्ञकर्म्म करने वाला मनुष्य है, वह अपने यज्ञ के अनुष्ठान से सब की पुष्टि तथा सन्तोष करने वाला होता है, इसलिए ऐसा प्रयत्न सब मनुष्यों को करना उचित है। (यजु0 ७.२७)

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पौराणिक कर्मकाण्डियों द्वारा स्थापित भ्रामक विचारधाराओं का न केवल खण्डन किया अपितु वेद के पदों का निरुक्तानुसार यौगिक अर्थ करते हुए सटीक अर्थ प्रस्तुत करते हुए, धरती से बाहर किसी स्वर्ग नाम के लोक की प्रचलित कल्पना का विरोध किया। मनुष्याकृति वाले देवताओं का यज्ञों में आकर हवि का भक्षण करने सम्बन्धी विचार उन्हें मान्य न था। अधिष्ठात्री देवताओं की सत्ता को उन्होंने स्वीकार नहीं किया। यज्ञों में जादू–टोने का भी उन्होंने घोर विरोध किया। उनसे पूर्व कर्मकाण्डियों द्वारा यज्ञ की एक सीमित परिभाषा होम के रूप में की जाती थी। महर्षि ने यज्ञ का वास्तविक प्रयोजन बताते हुए, एक व्यापक परिभाषा प्रस्तुत की है। उपरोक्त समस्त तथ्यों से यह प्रमाणित होता है कि याज्ञिक विचारधारा को महर्षि ने एक अप्रतिम योगदान दिया है।

‘सच्चे ऋषि, संसार के सर्वोच्च गुरु एवं अपूर्व वेद-धर्म प्रचारक स्वामी दयानन्द

—मनमोहन कुमार आर्य

हमारे लेख के शीर्षक से आर्यसमाज के अनुयायी तो प्रायः सभी सहमत होंगे परन्तु इतर बन्धु इस तथ्य को स्वीकार करने में संकोच कर सकते हैं। अतः अपने ऐसे बन्धुओं से हम प्रश्न करते हैं कि वह महर्षि दयानन्द से अधिक प्रतिभावान व योग्य ऋषि का नाम बतायें? दूसरा प्रश्न यह है कि महर्षि दयानन्द से उच्च कौन सा गुरु है जिसने संसार को धार्मिक विषयों सहित सभी प्रकार का सत्य ज्ञान दिया है? गुरु, ज्ञान व विद्या में पराकाष्ठा व उसका लाभ संसार के अधिक से अधिक लोगों में निःस्वार्थ भाव से वितरित करने वाले को कहते हैं। अज्ञानी, अल्पज्ञान व जिसकी बातें विचार व सिद्धान्त, भ्रान्तिपूर्ण हो वह विश्व गुरु तो क्या एक साधारण गुरु भी नहीं कहा जा सकता है। इसी प्रकार से महाभारत काल के बाद के पांच हजार वर्षों में ऐसा कौन सा विद्वान् हुआ जिसकी तुलना महर्षि दयानन्द से कर सकते हैं, जिसने उनकी तरह से वेदों की खोज की हो और उनके सत्य अर्थों को प्राप्त कर उसको अधिकतम लोगों तक पहुंचाने का पुरजोर प्रयास किया हो महर्षि दयानन्द जी का एक गुण और है जो उनके पूर्व व बाद के महापुरुषों सहित धार्मिक विद्वानों व धर्मगुरुओं में नहीं पाया जाता है। वह उनका बाल ब्रह्मचारी होने के साथ सिद्ध योगी होना भी है। इन सब व अन्य अनेक गुणों के कारण वह संसार के सर्वश्रेष्ठ मानव व सर्वोच्च विश्व गुरु सिद्ध होते हैं।

महर्षि दयानन्द गुरु, ऋषि व वेदप्रचारक कैसे थे? इसका उत्तर है महर्षि दयानन्द के समय तक चार वेदों की मन्त्र संहितायें हिन्दुओं वा आर्यों के आलस्य प्रमाद के कारण लुप्त प्रायः हो चुकी थीं। उनके जीवन काल में वेदों की मुद्रित मन्त्र संहितायें व सायण आदि भाष्य आदि देश भर में कहीं उपलब्ध नहीं होते थे। सायण ने जो मन्त्र भाष्य किया वह भी प्राचीन वेद परम्परा व अष्टाध्यायी—महाभाष्य—निरुक्त पद्धति के अनुरूप व उनसे पोषित नहीं था। उन्होंने सभी वेद मन्त्रों का प्रयोजन यज्ञार्थ बताकर उनके याज्ञिक अर्थ ही किये थे। **इसके विपरीत महर्षि दयानंद अपने समय व महाभारत काल के बाद पहले विद्वान् थे जिन्होंने चुनौती के स्वरों में घोषणा की थी कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।** अपनी इस मान्यता को वेदों का भाष्य आरम्भ करने से पूर्व उन्होंने चारों वेदों की भूमिका के रूप में लिखी पुस्तक **‘ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका’** में प्रमाणों के साथ प्रस्तुत किया है। महर्षि दयानन्द ने चारों वेदों के भाष्यों का लेखन आरम्भ किया था परन्तु असमय ही उनके देहावसान हो जाने से वे यजुर्वेद का सम्पूर्ण और ऋग्वेद के सातवें अध्याय तक के कुछ मंत्रों का ही भाष्य कर पाए थे। यदि उनके विरोधियों ने उन्हें विष देकर न मारा होता तो वह चारों वेदों का अपूर्व भाष्य करते। सारे देश में घूम—घूम कर वेदों का प्रचार, प्रतिपक्षियों से शास्त्रार्थ व वार्तालाप व

अन्य अनेक ग्रन्थों का लेखन, आर्यसमाजों की स्थापना, गोरक्षा आन्दोलन, हिन्दी रक्षा आन्दोलन आदि कार्यो को करते हुए भी उन्होंने यजुर्वेद का सम्पूर्ण और ऋग्वेद के कुल 10 मण्डलों में से 6 मण्डलों का पूर्ण और सातवे मण्डल का आंशिक भाष्य किया है। उनके द्वारा किया गया भाष्य आकार व परिमाण की दृष्टि से समस्त चार वेदों का 33 प्रतिशत से कुछ अधिक है। वेदों का यह भाष्य संस्कृत व हिन्दी दोनों में है। सभी मन्त्रों के ऋषि व देवताओं सहित स्वर व छन्द भी दिये गये हैं और मन्त्रों का पदच्छेद, अन्वय, पदों के संस्कृत व हिन्दी में अर्थ सहित इन दोनों भाषाओं में प्रत्येक मन्त्र का भावार्थ भी दिया गया है। मण्डल, सूक्त आदि के अन्त में पूर्व के सूक्त की बाद के सूक्त के साथ संगति कैसे लगती है, यह भी दर्शायी गई है। कई स्थलों पर सायण भाष्य की न्यूनता व त्रुटियों को बताया गया है। **इस प्रकार से महर्षि दयानन्द द्वारा किया गया भाष्य संसार के इतिहास में अपूर्व ही नहीं, अपितु उत्कृष्ट है।**

महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र से ज्ञात होता है कि उन्होंने चारों वेदों के प्रत्येक मन्त्र को जाना व समझा था तभी वह वेदों पर अनेक घोषणायें कर सके थे जिनमें चारों वेदों में मूर्तिपूजा का विधान कहीं नहीं है, ऐसी घोषणा भी सम्मिलित हैं। उनकी इस चुनौती को देश भर के बड़े से बड़े किसी पण्डित ने स्वीकार नहीं किया और काशी में इस विषय में जो शास्त्रार्थ हुआ उसमें भी पूरी काशी व देश के शीर्ष पण्डित वेदों में मूर्तिपूजा का विधायी एक मन्त्र भी नहीं दिखा पाये थे और न ही उस शास्त्रार्थ के 14 वर्ष बाद तक उनके जीवन काल में या आज तक दिखा सके हैं। **इस प्रकार से महर्षि दयानन्द चारों वेदों के मन्त्रों के अर्थों के द्रष्टा विद्वान् थे।** इस कारण उनको न केवल ऋषि=वेदों के मन्त्रों के अर्थों के द्रष्टा ही अपितु अपूर्व महर्षि भी कह सकते हैं। भारत में वेदों का पहली बार मुद्रण उन्हीं के प्रयासों से हुआ जो उनका इतिहास में अन्यतम कार्य है। अतः स्वामी दयानन्द, चारों वेदों के ज्ञाता व व्याख्याता की दक्षता रखने के कारण अपूर्व महर्षि सिद्ध होते हैं।

मनुष्यों को शिक्षा व ज्ञान देने वाले को गुरु कहते हैं। संसार की आदि से अब तक विभिन्न विषयों के असंख्य गुरु हो चुके हैं जिनका संकेत, विवरण व कुछ इतिहास रामायण व महाभारत सहित अनेक ग्रन्थों में दृष्टिगोचर होता है। महाभारत काल के बाद भी यह क्रम जारी है परन्तु महाभारत काल के बाद हम देखते हैं कि धर्म में अनेक विकृतियां आईं हैं। ईश्वर की आज्ञा के पालनार्थ किये जाने वाले यज्ञों में मूक पशुओं की हिंसा का क्रम जारी हुआ व बढ़ता रहा है। सामाजिक विषमता व अनेक कुरीतियां प्रचलित हुईं जिनका आधार अज्ञान व अन्धविश्वास थे जो अज्ञान व अविद्या से ही उत्पन्न होते हैं। **उस समय में ऐसे किसी सुधारक का विवरण नहीं मिलता जिसने यज्ञों में हिंसा सहित अज्ञान, अन्धविश्वास तथा कुरीतियों का पूर्ण निवारण करने का बीड़ा उठाया हो और इन समस्याओं के सत्य समाधान प्रस्तुत किये हों।** वेदों के सत्य अर्थों को तो इस अवधि में विलुप्त हुआ ही पाते हैं। महात्मा बुद्ध ने अवश्य यज्ञों में पशु हिंसा का विरोध किया परन्तु यह हिंसा जिस अज्ञान व स्वार्थ आदि के कारण अस्तित्व में आई थी उसका कोई समाधान नहीं किया। वेदों के सत्य अर्थ भी हमें उनसे नहीं मिलें। हम जानते हैं कि दूषित जल पीने योग्य नहीं होता परन्तु उसे छान कर, अशुद्धियों को हटाकर स्वच्छ व निर्मल बनाकर प्रयोग में लाया जा सकता है। यही विधि ग्राह्य होती है। यज्ञों का विरोध करने

से यथार्थ हिंसारहित यज्ञों से होने वाले लाभों से भी मनुष्य समाज वंचित हो गया। नास्तिकता को बढ़ावा मिला। ईश्वर की यथार्थ उपासना भी विकृत वा बन्द हो गई। यह हमें कोई समाधान नहीं लगता। बाद में स्वामी शंकराचार्यजी हुए। वह विद्या की दृष्टि से महाभारत काल के बाद सर्वाधिक योग्य व शीर्ष स्थान पर थे। उन्होंने समाज से ईश्वर की अवहेलना करने वाले नास्तिक मतों को हटा कर ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के साथ वैदिक धर्म की ओर लोगों को प्रवृत्त करना था। परन्तु उन्होंने जिस अद्वैतवाद का सिद्धान्त दिया, वह उनसे पूर्व के इतिहासादि, वेद, दर्शन व उपनिषदों में कहीं दृष्टिगोचर नहीं होता है। वेद से लेकर महाभारत काल व उसके बाद के साहित्य में सर्वत्र त्रैतवाद अर्थात् ईश्वर, जीव व प्रकृति की पृथक–पृथक सत्ता का वाद ही प्रचलित पाया जाता है जो कि पूर्णतया व्यावहारिक एवं यथार्थ है।

आज का सारा संसार सृष्टि के अस्तित्व व महत्व को स्वीकार करता है। यह संसार व इसके दिन प्रतिदिन होने वाले आविष्कार एवं घटनायें स्वप्नवत् न होकर वास्तविक व यथार्थ हैं। भारत में रेलें चलती हैं और हम उनका उपयोग करते हैं, यह स्वप्नवत नहीं, हकीकत व यथार्थ हैं। स्वामी शंकराचार्य जी के बाद जो मत देश व विदेश में उत्पन्न हुए वह एंकागीं व अपूर्ण थे। उनमें यदि बहुत सी बातें अच्छी, सत्य व उचित थी तो बहुत सी अज्ञान व अन्धविश्वासों से युक्त अविवेकपूर्ण भी हैं। अतः अज्ञान, अन्धविश्वास व अविवेकपूर्ण बातों को मानने वाले व प्रचार करने वाले सच्चे व सर्वोच्च गुरु की उपमा व उपाधि से अभिहित नहीं कहे जा सकते। महर्षि दयानन्द महाभारत काल के बाद इतिहास में पहले महापुरुष हुए हैं जिन्होंने सत्य की कसौटी को पकड़ा और चाहे ईश्वर का अस्तित्व व उसकी उपाासना हो या कुछ अन्य भी, सभी को सत्य की कसौटी पर कसा और उसका ऐसा प्रचार किया जिसकी इतिहास में दूसरी मिसाल नहीं है। **उन्होंने सभी मतों के अज्ञान, अन्धविश्वासों व मिथ्याचारों पर दृष्टि डाली और उन्हें मनुष्यजाति के सुख शान्ति के लिए हानिकर जानकर उसके निवारण का अपूर्व प्रयास व पुरुषार्थ किया। ऐसा करने में उनका अपना कोई निजी प्रयोजन, हित व स्वार्थ नहीं अपितु केवल ईश्वर की आज्ञा का पालन व लोकोपकार की भावना ही थी। महर्षि दयानन्द ज्ञान की दृष्टि से महाभारत काल के बाद उत्पन्न हुए शीर्ष पुरुष तो थे ही, उन्होंने वेद की सत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों के लेखन व मौखिक प्रचार का भी कीर्तिमान स्थापित किया है।** इसके लिए उन्होंने कितने कष्ट सहे, इसका अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता। वह शायद इतिहास में पहले व्यक्ति थे जिन्होंने संसार से धार्मिक व सामाजिक अज्ञान, अन्धविश्वास, अन्याय, शोषण, उत्पीड़न को दूर कर ईश्वर की सच्ची उपासना, यज्ञ के सत्य स्वरुप का प्रचार व उसके क्रियात्मक पक्ष की विधि का संशोधन व प्रचार किया। उनके द्वारा किए गये एक नही ऐसे अनेकानेक काम हैं जिस पर बड़े–बड़े ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं। **मानवता की सेवा व सुधार का उन्होंने अपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया है जिसके कारण हम स्वामी दयानन्द को विश्व के मार्गदर्शकों में सर्वोच्च स्थान पर पाते है।**

स्वामी दयानन्द, मुत्यु के कारण व सत्य की खोज में अपनी आयु के बाईसवें वर्ष में घर से निकले पड़े थे। पूरे देश का भ्रमण कर उन्हें मिले सभी गुरुओं की संगति व सेवा कर तथा अपनी अपूर्व बौद्धिक क्षमताओं से उन्होंने अपूर्व ज्ञान प्राप्त किया था। वह सिद्ध योगी बने और

उन्होंने संस्कृत भाषा की आर्ष व्याकरण पद्धति, उपनिषदों, दर्शनों, वेदांगों व वेद के ज्ञान सहित दण्डी गुरु प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती के शिष्यत्व से प्राप्त किया। उनकी प्रेरणा व आज्ञा से व अपने विवेक से उन्होंने अज्ञान, अन्धविश्वास, कुरीतियां, सामाजिक असमानता व विषमता, देश सुधार व देशोन्नति का कोई कार्य छोड़ा नहीं अपितु सभी कार्यों को प्राणपन से किया। इन सब कार्यों का आधार उनका वैदिक ज्ञान था। सभी सुधारों का आधार वेदाध्ययन, वेदाचारण व वेद प्रचार ही है। स्वामी दयानन्द ने वेद प्रचार के लिए ही मुख्यतः सर्वाधिक प्रयत्न किये। उनके मौखिक प्रचार के अतिरिक्त वेदों का भाष्य, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका एवं संस्कारविधि आदि अन्यान्य ग्रन्थ वेद प्रचार के ही अंग–प्रत्यंग हैं। **वह महाभारत काल के बाद के अपूर्व वेद प्रचारक हुए हैं। ऐसा वेद प्रचारक सृष्टि की आदि से वर्तमान युग तक होने का वर्णन नहीं मिलता है। उनका वेद प्रचार का कार्य संसार के कल्याण की दृष्टि से सर्वोत्तम कार्य है। मनुष्य जीवन में वेद प्रचार का कार्य करना एक प्रकार से ईश्वर का ही कार्य साधना है। अपने कल्याण की इच्छा करने वाले सभी मनुष्यों को वैदिक साधना के साथ वेदाध्ययन व वेद प्रचार को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाना चाहिये।** सभी सरकारों को योग्य वेद प्रचारकों का सर्वाधिक सम्मान व उनकी आर्थिक आवश्यकताओं का ध्यान रखना चाहिये। देश व संसार में जितना अधिक वेदप्रचार होगा, उतना ही मानवता का हित होगा। यह कार्य ईश्वर का कार्य होने के साथ मानव जाति की समग्र उन्नति व सुख शान्ति का कार्य है। इसको समाज में मुख्य स्थान मिलना चाहिये।

सादर अनुरोध

तपोवन आश्रम के सदस्य बनें और आश्रम द्वारा किये जा रहे जनोपयोगी कार्यों में सहयोग प्रदान करें।

साधारण सदस्य रु 1200/– प्रति वर्ष	सम्मानित सदस्य रु. 25000/– प्रति वर्ष
सहायक सदस्य रु. 6000/– प्रति वर्ष	विशिष्ट सम्मानित सदस्य रु. 50000/– प्रति वर्ष
विशिष्ट सदस्य रु. 12000/– प्रति वर्ष	

तपोवन आश्रम का मेन गेट रात्रि 9 बजे बंद कर दिया जाता है यदि आप रात्रि 9 बजे के बाद आश्रम में निवास हेतु आ रहे हैं तो कृपया आश्रम के कर्मचारी श्री प्रकाश–8954361107 अथवा श्री जगमोहन–7830798919 पर पूर्व में ही सूचित कर दें ताकि आपके आवास एवं भोजन की उचित व्यवस्था की जा सके।

अधिक जानकारी के लिए आश्रम के सचिव से दूरभाष नं० 9412051586 पर वार्ता करें।

सौजन्य से–
KUKREJA INSTITUTE OF HOTEL MANAGEMENT
DEHRADUN

ऋषिवर देव दयानन्द की समाज, को आवश्यकता क्यों?

—ब्र. शिवदेव आर्य, गुरुकुल पौंधा, देहरादून

सिद्धार्थ ने आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व इस पृथिवी में जन्म लिया था। वे जिधर जाते उन्हें हिंसा का अराजक वातावरण दिखाई देता था। लाखों पशुओं की बलि चढ़ाई जा रही थी। धर्म के नाम पर हजारों मूक पशुओं की निर्मम हत्या की जा रही थी। इन हत्याओं को धर्म के ताने—बाने में लपेटा जा रहा था। मंदिरों तथा उपासना के पवित्र स्थल रक्त रंजित हो रहे थे। सब चुप बैठे थे। सिद्धार्थ साहसी था। तार्किकता और मानवीय संवेदना से भरा चित्त उसे चैन से सोने न देता था। उसने समाज के तथाकथित कर्णधारों से, पूछा—धर्मध्वजी, इस कुत्सित हिंसा और बलि के लिए कौन जिम्मेदार है?सबने एक ही स्वर में जवाब दिया वेद में लिखा है। यह वेदोक्त धर्म है। सिद्धार्थ इस अनुचित कथन को मानने को तैयार नहीं था। वह वेदपोषित धर्म के खिलाफ ही नहीं, वेद के विरुद्ध हो गया।

लगभग ढाई हजार वर्षों बाद उन्हीं घटनाओं की फिर पुनरावृत्ति होती है। गुजरात के टंकारा ग्राम में तीव्र मेधा संपन्न, प्रेम, दया करुणा से परिपूर्ण हृदय वाले मूलशंकर का जन्म हुआ। मूलशंकर ने भी चाचा और बहन की मृत्यु के रूप में जीवन के उसी सत्य का साक्षात्कार किया। उन्होंने सिद्ध, सन्तो, तपस्वियों का संग किया। कई—कई दिनों तक निराहार रहे। हिमालय की कंदराओं मे तपस्या की। बर्फीली नदियों को पार किया। समाधि में लीन रहे। गुरुवर विरजानन्द की शरण में शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। ज्ञान और तप के सर्वोच्च शिखर को छुआ।

वे भी अपने करूणापूर्ण चित्त से प्रेरित होकर गुरुदेव की आज्ञा लेकर, देश का भ्रमण करने निकल पड़े। तथाकथित ब्राह्मणों का समाज में वर्चस्व था। सती प्रथा के नाम पर स्त्रियों को जिन्दा जलाया जा रहा था। स्त्रियों को पढ़ने का अधिकार न था। बालविवाह, नारी—शिक्षा, विधवाओं पर अत्याचार अंधविश्वास, पाखण्ड, जातिप्रथा जैसी न जाने कितनी कुरीतियों ने समाज को जकड़ रखा था। बलिप्रथा के नाम पर रक्त तब भी बह रहा था। इस दृश्य ने मूलशंकर को हिलाकर रख दिया। मानवीय संवेदना से भरा उनका चित्त बेचैन हो उठा। जब सारा आलम सोता था, वे रात को उठकर रोते थे।

वही सवाल, जो ढाई हजार वर्ष पूर्व सिद्धार्थ ने उठाया फिर उठा। इस कुत्सित हिंसा और बलि के लिए जिम्मेदार कौन है? मानव मानव के बीच ऊँच—नीच की रेखा किसने खींची। नारी को पढ़ने का अधिकार क्यों नहीं है। सबने एक ही स्वर में फिर वही जवाब दिया—वेद में लिखा है। यह वेदोक्त धर्म है।

सवाल भी लगभग वही था। जवाब भी वही था। अन्तर था मूलशंकर और सिद्धार्थ की प्रतिक्रिया में। सिद्धार्थ ने बिना क्षण गंवायें कह दिया—मैं ऐसे वेद को नहीं मानता, जो समाज को हिंसा की प्रेरणा देता है। मूलशंकर ने कहा—मुझे दिखाओं तो सही वेद में कहाँ लिखा है? मैं वेद का स्वाध्याय करूँगा। वेद पढ़ूँगा,

उसका और विवेचन करूँगा। महर्षि वेद के विरुद्ध नहीं हुए। उन्होंने वेदों को पढ़ा और पाया कि–वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद के अपने स्वाध्याय से आगे चलकर वे वेदों वाले स्वामी कहलाए। आधुनिक युग में, वैदिक ज्ञान को विज्ञान से जोड़ने वाले वे प्रथम व्यक्ति थे। अगर दयानन्द नहीं होते तो शायद हम सबके हर घर में एक सिद्धार्थ होता, जो वेद और तत्पोषित धर्म को नकार रहा होता। महर्षि ने न जाने कितने नास्तिकों को आस्तिक बनाया। आंग्लशिक्षा की चकांचौध से प्रभावित मुंशीराम और गुरुदत्त जैसे न जाने कितने युवाओं के मन को महर्षि के जीवन ने वैदिक ज्ञान की गंगा से परम पावन कर दिया था।

युवा पीढ़ी अपने सांस्कृतिक मूल्यों से दूर हो गई है। नित नए–नए गुरुओं का डंका बज रहा है। आज अगर हम अपनी पीढ़ी को भौतिकता की चकाचौंध में खोते हुए नहीं देखना चाहते तो हमें दयानन्द के बताए मार्ग पर चलना होगा।

देश के सामने एक बड़ी चुनौती है। अज्ञान, अन्याय और अभाव को दूर करने में हम असमर्थ रहे है। अज्ञान से लड़ने वाले ब्राह्मणों (विद्वानों) का समाज में अभाव है। अन्याय से निजात दिला सकने वाली क्षात्र शक्ति कहीं अदृश्य हो गई। समाज का अभाव दूर कर सकने वाले वैश्य कहीं दिखाई नहीं देते। वर्णव्यवस्था के बिना इसका समाधान कैसे होगा? अज्ञान के अभाव में अंधविश्वास तथा पाखंड का प्रचार हो रहा है। वर्णव्यवस्था के सामाजिक मनोविज्ञान को दयानन्द के बिना समझा नहीं जा सकता। फलित ज्योतिष और कृपा का कारोबार करने वालों की कतार दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है। मंदिरों के नाम पर करोडों का वारा न्यारा किया जा रहा है। जिन मन्दिरों को समाज सुधार का केन्द्र बनाना था, वे अपनी ही रोटी सेंकने में मस्त हो गए हैं। धर्मस्थलों को व्यभिचार तथा व्यसन का केन्द्र बनाने में कोई ज्यादा देर नहीं है। भारतीय धर्म तथा अध्यात्म को नीचा दिखाने की नित नई कोशिश की जा रही है। महर्षि दयानन्द के तर्क तीक्ष्णशरों के बिना इस महायुद्ध में विजयी नहीं बना जा सकता। वेदादि शास्त्रों तथा तत्पोषित धर्म की रक्षा के लिए महर्षि के विचारों की सामयिकता हमेशा बनी रहेगी।

जब–जब वेदों की सामयिकता तथा उसकी वैज्ञानिक पृष्ठभूमि की चर्चा होगी **'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका'** की याद जरुर आयेगी। जब धर्म की आड़ में पल्लवित इन विविध सम्प्रदायों/पन्थों का कोई गहराई से विश्लेषण करेगा तो **'सत्यार्थ प्रकाश'** का प्रकाश उसका मार्ग प्रशस्त करेगा। जब कभी मानव निर्माण की विधि को खोजने का प्रयास किया जायेगा, **'संस्कारविधि'** मानव निर्माण के विज्ञान को परिभाषित करती हुई परिलक्षित होगी। मानव व्यवहार के विज्ञान की समझ के लिए जब, आगे बढाने की कोशिश की जायेगी महर्षि दयानन्द प्रणीत **'व्यवहारभानु'** मानव मनोविज्ञान के आकाश में अपनी किरणें प्रसारित करता नजर आएगा। जब–जब समाज सुधारकों की गणना की जायेगी समाज सुधारक महर्षि दयानन्द उस आकाश में चमकते हुये 'ध्रुव' तारे की भांति दिखाई देंगे। महर्षि ने वैदिक ध्वजा लेकर पुरातन ज्ञान के जल से नवीन जगत के क्षेत्र को सींचा है। नारी को अबला से सबला बनाकर उन्होंने गार्गी, मदालसा और दुर्गा तक बनने का अधिकार दिया। नारी जाति को समाज में गौरवपूर्ण स्थान दिलाने में उनकी भूमिका अपूर्व रही है। जाति–पाँति का भेद भुलाकर उन्होंने कहा कि हम सब एक ईश्वर के पुत्र हैं और वेद भी कहता है–'**श्रृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः**'।

समाज सुधारक महर्षि दयानन्द

—डा० सुधीर कुमार आर्य

कल्याणकारी भाव

एक बार की बात है कि किसी सेठ ने मन्दिर बनवाने के लिए स्वामी दयानन्द की सम्मति माँगी। स्वामी दयानन्द ने गम्भीर तथा निडर होकर उत्तर दिया – सेठ जी प्राणिमात्र का कल्याण करने वाले, परोपकारी किसी अन्य कार्य मे धन लगाओ, जड़ की पूजा के स्थान इस मन्दिर को बनाने से कोई लाभ नही। स्वामी जी महाराज के सत्यपरामर्श से उस सेठ ने मन्दिर बनवाने का विचार त्याग दिया।

शिक्षा—गुणेषु क्रियतां यत्रः किमाटोपैः प्रयोजनम् जीवन की सफलता के लिए परमात्मा के दयालु, रक्षक, दानशीलता आदि गुणों को जीवन में धारण करना चाहिए, मन्दिर आदि बनवाकर मूर्ति स्थापित करके उस जड़ मूर्ति मे प्राणनिष्ठा करके, महंगे वस्त्र तथा कीमती गहने पहनाकर उसकी पूजा आरती आराधना आदि के व्यर्थ के आडम्बर का कोई लाभ नही। यह बात स्वामी दयानन्द ने अपनी प्रत्युत्पन्न बुद्धि से तर्कपूर्वक सेठ को समझाई जो सेठ की समझ में आने पर धन का अपव्यय बच गया तथा किसी अन्य धार्मिक कार्य से उस धन का सदुपयोग स्वामी दयानन्द की सत्प्रेरणा से उस सेठ ने किया।

सद्व्याख्याता ऋषि

अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते।
धर्मजिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः।।

धन तथा काम में अनासक्त को ही धर्म के ज्ञान को जानने का विधान है। धर्म ज्ञान की कसौटी वेदज्ञान है। जो धर्म के रहस्य तत्व तथा सार को जानना चाहते हैं उन जिज्ञासुओं को वेदों को परम प्रमाण मानना चाहिए। अर्थात् धर्म का स्वरूप रहस्य जानने के लिए वेद ही परम प्रमाण है।

एक बार की बात है। मुख्य पादरी राबिन्सन महोदय के द्वारा आमन्त्रित करने पर जब स्वामी दयानन्द पादरी महोदय से मिलने गये। तब शिष्टाचार स्वागत सत्कार आदि के बाद पादरी महोदय ने स्वामी दयानन्द के सम्मुख पौराणिक कथा द्वारा प्रचलित एक शंका रखकर समाधान माँगा।

पादरी महोदय ने पूछा कि— ब्रह्मा ने अपनी बेटी से बलात्कार किया इस दुरूक्ति का आप क्या समाधान करेंगे?

वेदों के प्रकाण्ड पण्डित स्वामी दयानन्द ने तुरन्त उत्तर दिया कि यह एक आलंकारिक प्रसंग हैं जो वेद से लेकर असंगत ढंग से व्याख्या किया गया हैं। वेद के इस आलंकारिक प्रसंग की व्याख्या दो प्रकार से हो सकती हैं—

1. पुराणों मे इस प्रसंग का मानवीकरण करके प्रस्तुत किया हैं। जबकि यह भौतिक बलात्कार नहीं है अपितु राजव्यवस्था द्वारा अपने अधीन राजाओं से कर लेने का आलंकारिक वर्णन हैं। राज्य का अध्यक्ष राजा अपने अधीन समितियों से बलपूर्वक (बलात्) कर को प्राप्त करे, जो समितियाँ स्वेच्छा से कर नहीं देती हों, उनमें बलात् कर लेवे।
2. ब्रह्मा नाम का कोई अन्य ऋषि भी हो सकता हैं। क्योंकि सदा से प्राचीन महापुरूषों के समान नाम वाले व्यक्ति हुए हैं।

इस समाधनद्वय के पश्चात् पादरी राबिन्सन महोदय को समझाते हुए ऋषि दयानन्द कहते हैं कि शास्त्रों में ऐसा कोई प्रमाण नही मिलता कि ब्रह्मा ने इस प्रकार का कुकृत्य किया। महर्षि ब्रह्मा अतीव सदाचारी तथा पवित्र आचरण वाले थे।

स्वामी दयानन्द के सटीक युक्तियुक्त

उत्तर को सुनकर पादरी राबिन्सन अतीव प्रसन्न हुए तथा मुक्त कण्ठ से स्वामी जी की प्रशंसा करते हुए इस प्रकार का प्रमाण पत्र दिया–

स्वामी दयानन्द वेदों के प्रकाण्ड पण्डित हैं और विशिष्ट विद्वान् हैं। मैंने इन जैसा वेदों का दूसरा विद्वान अपने जीवन मे नही देखा है। इस पृथ्वी पर इस जैसे देवपुरूष विरले ही होते हैं। इनके सम्पर्क से प्रत्येक मनुष्य सद्धर्म का लाभ प्राप्त कर सकेगा इसलिये सभी को इनका सम्मान करना चाहिये।

शिक्षा– वेद ज्ञान की अमूल्य निधि एवं धरोहर है। इनमे आंलकारिक प्रसंग से जटिल विषय को सरल करके समझाया गया है। देश का मानवजाति का दुर्भाग्य है कि महाभारत के पश्चात वेदों के पठन पाठन की परम्परा छूट गई तथा चारित्रिक कुरीतियाँ प्रचलित हो गई जो हमारे पतन का तथा वैदिक सभ्यता के उपहास का कारण बनी।

इन कुरीतियों को देखकर ऋषि दयानन्द ने योगबल से समाधि लगाकर वेदमन्त्रों के उन आलंकारिक प्रंसगों का सही अर्थ जनसामान्य के सामने रखा तथा यह आर्यसमाज का तीसरा नियम बनाया कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक हैं, वेद का पढ़ना पढ़ना तथा सुनना सुनना सभी आर्यो का परम धर्म है।

स्वास्थ्य के लिये जरूरी है कुलथी का सेवन

कुलथी छोटानागपुर और उड़ीसा के क्षेत्रों में अधिक मात्रा में पायी जाने वाली प्रमुख फसल है। यह भी एक किस्म की दाल ही है। यह अरहर के दाने की तरह ही चिपटी होती है। इसका वानस्पतिक नाम एताइलोसिया स्केरे बिजोइंडिस है। इसमें काफी मात्रा में प्रोटीन पाया जाता है। इसकी खेती प्रायः बरसात के मौसम में होती है। दाल बनाने पर इसका रंग मटमैला हो जाता है। खाने में यह अत्यन्त ही स्वादिष्ट होती है। आयुर्वेद विशेषज्ञों का कहना है कि यह प्लीहा वृद्धि को दूर करने वाली, मधुर, क्षुधावर्धक तथा चक्षु विकार नाशक है।

लोग इसकी दाल बनाकर सेवन करते हैं, स्वास्थ्य की दृष्टि से यह सुपाच्य भी है तथा इसे बिमार व्यक्ति भी खा सकते हैं, क्योंकि यह दाल काफी हलकी होती है। यह जठराग्नि को प्रदीप्त करती है। कुलथी का पानी भी स्वास्थ्य की दृष्टि से फायदेमंद है। आयुर्वेद में इसे स्वास्थ्य वर्द्धक बताया गया है। कुलथी में प्रचुर मात्रा में पौष्टिक तत्व पाये जाते हैं। इसमें विटामिन ए, बी, फास्फोरस तथा कार्बोहाइड्रेट प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। महिलाओं में होने वाले प्रदर रोग के लिये कुलथी अत्यन्त उपयोगी है। इसे उबालकर इसका पानी पीने से काफी लाभ मिलता है।

खूनी बवासीर के रोगियों को कुलथी के आटे की पतली कांजी का सेवन करना चाहिये। 100 ग्राम कुलथी की दाल का पानी पीने से मोटापे में कमी आती है। कुलथी का आटा बदन में मालिश करने से पसीने की शिकायत दूर होती है। वात ज्वर में 60 ग्राम कुलथी लेकर पानी में उबाले। जब थोड़ा पानी बच जाय तो आधा चम्मच सोंठ और उसमें थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर रोगी को दे। इससे रोग दूर होता है।

अतिसार रोग के लिये भी यह काफी फायदेमंद है। इसके पत्ते को पीसकर उसमें कत्था मिलाकर अतिसार के रोगी को देने पर राहत मिलती है।

पेट में होने वाली पथरी के लिये यह बहुत लाभदायक होती है। इसकी दाल बनाकर रोजाना इसके सेवन से गुर्दे तथा मूत्राशय की पथरी दूर हो जाती है। छोटानागपुर तथा उड़ीसा के कई क्षेत्रों में प्रसव के बाद माता को कई दिनों तक कुलथी का पानी दिया जाता है। इससे पेट साफ होता है और मासिक धर्म भी साफ आता है।

वर्तमान जन्म के पापों का फल नाश

—महात्मा प्रभु आश्रित महाराज

प्रश्न— पापों का नाश भी किसी प्रकार हो सकता है या नही? यदि हो सकता है तो किन पापों का? कब तक और कैसे?

उत्तर — इसे भली भांति समझने के लिए पहला प्रश्न तुम यह समझो कि हम इस जन्म के किसी पाप का नाश कर सकते है या नहीं? दृष्टान्त—रूप से इस पर यूं विचार करो कि मैने तुमसे 5 रूपये यह कहकर हाथ उधार लिए कि शाम तक लौटा दूंगा। उनके लिए तुम न तो मेरे हस्ताक्षर ही कराते हो, न उन्हें कही रोकड़ में ही चढ़ाते हो, प्रत्युत भूल न जाने के विचार से किसी नोटबुक, कागज या तख्ती पर लिख देते हो, जिसे कच्चा खाता कहते हैं। यदि मै शाम तक वह रूपया दे दूं तो तुम उसे काट डालोगे उसके लिए उससे अतिरिक्त न और कुछ लिखते हैं, न पढ़ते, न सूद है, न ब्याज। यदि मै उस दिन न दूं और दूसरे दिन तुम्हारे मांगने और चेतावनी कराने पर भी न दूं तो तुम उसे कच्चे खाते से काट कर पक्के खाते मे मेरे लेखे मे लिख लोगे और अन्त मे ब्याज सहित मुझ से कठिनाई के साथ वसूल करोगे।

इसी प्रकार मनुष्य जो पाप करता है वह भी उस के सिर पर एक ऋण के समान चढ़ा रहता है। यदि वह उस पाप को जान कर उसके लिए अपने आप ही पश्चाताप या किसी और उचित रीति से श्रद्धापूर्वक उसका प्रायश्चित कर लेता है, तो बस वह पाप इस जन्म का यहीं समाप्त हो जाता है, अगले जन्म में उसका कुछ भी सम्बन्ध नहीं रहता। परन्तु यदि सब कुछ जानने— बूझने पर अपने आप ही प्रायश्चित कर लिया जाए या प्रभु के बार बार चेतावनी देने पर ही जो नाना प्रकार के दुखों और कष्टों द्वारा मिलती रहती हैं, तुम सम्भल गए और तुमने अपने उस पाप को याद करके सच्चे दिल से उस पर पश्चाताप कर उसका प्रायश्चित कर लिया तो भी वह समाप्त हो गया और आगे उसका कुछ सम्बन्ध नहीं रहा, परन्तु यदि इन दोनों सुरतों में भी तुम्हारे कान पर जूं तक न रेंगी, तो वह छोटा सा बीज वृक्ष का रूप धारण करके दिनोंदिन बलवान तथा दृढ़ होता रहेगा और अगले जन्म में अवश्य अपने फल तुम्हारे सामने भेंट करेगा।

पुरोहितों की आवश्यकता

देहरादून जनपद की निम्न आर्य समाजों के लिए व्यवहार कुशल, मृदुभाषी पुरोहित की आवश्यकता है। नि:शुल्क आवास व्यवस्था के साथ मानदेय कर्मकाण्डीय योग्यता व अनुभवानुसार देय होगा।

आर्य समाज का नाम	सम्पर्क सूत्र एवं मोबाईल नम्बर
आर्य समाज मसूरी	श्री नरेन्द्र साहनी, 9837056165
आर्य समाज चकराता	श्री एस.एस. वर्मा, 9410950159
आर्य समाज धर्मपुर	श्री शत्रुघ्न कुमार मौर्या, 9412938663

व्यवहार कैसा हो?

—श्री ओमप्रकाश अग्रवाल

दुनिया में एक कहावत प्रसिद्ध है कि— जो व्यवहार आप दूसरे से चाहते हो वो खुद भी करो। जो व्यवहार तुम को अच्छा नहीं लगता वो दूसरों के साथ भी मत करो। यह वाक्य सारी दुनियाँ में बहुत मशहूर है इस वाक्य को हर भाषा में लिखा गया है बात भी सही है। हर आदमी चाहता है मेरे साथ अच्छा व्यवहार हो। चोर भी चाहता हैं मेरा नौकर ईमानदार हो। उसका व्यवहार ठीक हो। एक चोर दूसरे चोर से यही आशा रखता हैं। मुझसे सच्चा व्यवहार करना। अगर व्यवहार सही है। तो दुनिया अपनी होती है। कई लोग शुरू शुरू में व्यवहार सही करते हैं। उसके बाद उनका व्यवहार बदल जाता हैं।

स्वामी दयानन्द जी ने व्यवहारभानु नामक पुस्तक लिखी है जो आर्य समाजों मे मिलती है। उसमें कुछ बातो को लिखा गया है। व्यवहार कैसा हो? बाजार में कैसा हो? दुकान पर, दफ्तर में कैसा व्यवहार हो? इसकी झलक उसमे मिलती हैं। व्यवहार में सच्चाई होनी चाहिए। मीठापन होना चाहिए। ठगी, चोरी वाला व्यवहार कुछ दिन ही चलता है। एक बार किसी के साथ ठगी कर लो कम से कम दस लोगो को पता चल जाता है। अगर दस लोगो से ठगी करो तो सौ लोगों को पता चल जाता है। अगर सौ लोगों से ठगी करो सबको पता लग जाता है। वह ठग कहलाता है। मरने के बाद भी लोग उसे ठग कहते है।

एक बार बाबा फरीद शहर की ओर आ रहा था। सर्दी के दिन थे वर्षा भी हो रही थी। रात का समय हो चुका था। बाबा फरीद को सर्दी लग रही थी। देखता है एक चौबारा है उसमे रोशनी हैं। बाबा फरीद ऊपर गए बोले — माँ ! दरवाजा खोलो। अन्दर से आवाज आई— देखों, माँ कहने वाला आज कौन आया है? नौकरानी आई, दरवाजा खोला तो देखा कोई फकीर लगता हैं। महारानी बोली — अन्दर ले जाओ। बाबा फरीद अन्दर आ गया। आग जलाई गयी, कम्बल दिया गया। रात बीतने वाली थी, बाबा फरीद ने देखा मै गलत जगह पर आ गया यह तो वेश्या का कोठा है।

दिन निकल रहा है। मन ही मन फरीद अपने को कोस रहा था। इतने से नीचे से एक अर्थी निकली जिसके पीछे लोग जा रहे थे। वेश्या ने अपनी नौकरानी को कहा— देखकर आओ यह स्वर्ग गया या नरक गया? बाबा फरीद सब बाते सुन रहा था। सोच रहा था कि यह सब क्या हो रहा है? नौकरानी जो गई थी थोड़ी देर में वापस आ गई बोली— यह तो स्वर्ग को गया है। यह बात सुनकर फरीद को और भी अचम्भा हुआ। नौकरानी को पता है स्वर्ग क्या होता हैं और नरक क्या होता हैं।

उसने वेश्या को पूछा— बेटी। यह बताओ तुम को कैसे पता लगा यह स्वर्ग गया है? वेश्या बोली — महाराज! जब इन्सान मर जाता हैं तो उसका व्यवहार पीछे रह जाता है। जो दुनियाँ होती है। उसके व्यवहार के प्रति अपनी प्रतिक्रिया कहती है। उसी से पता चल जाता है। अच्छा हो तो स्वर्ग, गन्दा हो तो नरक। सीधा तरीका है व्यवहार ठीक रखो।

जीवनबोध का पर्व शिवरात्रि

—डा० महेश विद्यालंकार (वेदप्रवक्ता)

शिवरात्रि भारत का धार्मिक, सांस्कृतिक और महान प्रेरक पर्व है। इसका सम्बन्ध मंगलकारी शिवभगवान की पूजा उपासना व्रत एवं संकल्प भावना से है। सभी धार्मिक आस्था वाले इस पर्व को किसी न किसी रूप में बड़ी श्रद्धाभक्ति से मनाते हैं। आज जो शिवरात्रि का आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तथा लोक में प्रचलित स्वरूप मिलता हैं वह मात्र बाह्याडम्बर और रस्म रिवाज तक सीमित हो रहा हैं। सत्य है कि शिवरात्रि आत्मबोध, सत्यबोध तथा जीवनबोध का पर्व हैं। पर्व जगाने, सम्भलने व दिशाबोध कराने आते हैं। आज पर्वो की मूल चेतना, उद्देश्य, सन्देश तथा सत्यस्वरुप विकृत हो रहा है। पर्वो से हम जीवन एवं जगत के लिए कुछ प्रेरणा व सीख नही ले पा रहे है। शिवरात्रि पर्व परमात्मा के सत्य स्वरूप और जीवन लक्ष्य का सन्देश देने प्रतिवर्ष आता है। कल्याणकारी शिव का जो बोध कराए, उससे मिलने की भावना जागृत करे वही सच्ची शिवरात्रि है। बाकी तो संसारी और भोगरात्रियां है और रात्रियां हमें सुलाने आती हैं। शिवरात्रि जगाने और जीवनबोध कराने आती है। यह आत्मबोध का सार्थक पर्व है।

आर्यसमाज के जन्म, निर्माण और इतिहास में शिवरात्रि की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। संसार की साधारण घटनाएं महापुरूषों के जीवन में परिवर्तन, मोड़ और क्रांति ला देती है। मूलशंकर के जीवन में शिवरात्रि सत्यबोध और वैचारिक क्रांति लेकर आई। वे शिवरात्रि की रात जागने के बाद जीवनभर चैन से नहीं सोए। यदि मूलशंकर के जीवन में सच्ची शिवरात्रि न आती तो वे दयानन्द न बनते। ऋषि दयानन्द न होते तो आर्यसमाज न होता। यदि आर्यसमाज न होता तो विस्मृत वैदिक धर्म, वेद, यज्ञ, समाजसुधार आदि का सत्यस्वरूप कौन दिखाता? ऋषि ने अपना सम्पूर्ण जीवन वेदोद्धार, देश, धर्म, मानवता तथा संसार के उपकार के लिए आहुत कर दिया। ऐसा अनोखा निराला विलक्षण सत्य का शोधक सत्यवक्ता, सत्य का प्रचारक और सत्य पर शहीद होने वाला महापुरूष दुनिया में कोई दूसरा नही हुआ है। ऋषि की विशेषताओं और उपकारों का जितना गुणगान किया जाय उतना थोड़ा है। सत्य है कि ऋषि के ज्ञान बोध का पर्व शिवरात्रि हम सब ऋषि भक्तों आर्यसमाजियों, सभा संगठन, संस्थाओं आदि के अधिकारियों के लिए आत्मचिंतन आत्मविश्लेषण, कर्तव्यबोध सत्यधर्म आदि के चिन्तन, मनन का अवसर है क्या खोया? क्या पाया? ऋषि की विचारधारा के प्रचार और प्रसार के लिए हम क्या कर रहे हैं। ऐसे अवसर सोचने, अपने को बदलने, व्रत तथा संकल्प के लिए आते हैं।

संसार की सबसे बड़ी मूल्यवान तथा महत्वपूर्ण चीज जीवन है। हम अपने आत्मकल्याण, आत्म उत्थान और जीवन निर्माण के लिए धार्मिक स्थानों, सद्ग्रन्थों एवं महापुरूषों के साथ जुड़ते हैं। यदि हमारे जीवन में सत्यबोधक नही हुआ, हमने अपने जीवन की बुराइयों, दुर्गुणों, दोषों आदि को दूर नही किया, पशुता से देवत्व की प्रवृत्ति नहीं बनाई, जीवन को धार्मिकता, आध्यात्मिकता तथा प्रभु के साथ नही जोड़ा तो सत्य है कि हमने शिवरात्रि बर्हिजगत मे मनाई है। अन्तर्जगत में अन्धेरा, अज्ञान, स्वार्थ, अहंकार, पशुता आदि भरी रही तो समझना चाहिए हम अपने को धोखे और

अन्धेरे में रख रहे हैं। इतिहास साक्षी है जो अन्दर से जागे हैं, उनके जीवन बदल गये हैं। जीवन का कायाकल्प हो गया। पतित जीवन तपस्वी बन गए। भोगी, विलासी, दुर्व्यसनी मुंशीराम तपस्वी त्यागी बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द बन गये। भोग विलास तथा वासनाओं के कीचड़ में फंसे अमीचन्द अमूल्य हीरा बन गए। गुरूदत्त नास्तिक से आस्तिक बन गए। यह तब सम्भव हुआ जब उनके हृदय मे ज्ञान की अग्नि प्रज्वलित हुई। हमारी ज्ञान, विवेक तथा जीवनों मे परिवर्तन, सुधार व आकर्षण उत्पन्न नही हो पा रहा है। मूल मे भूल हो रही है। हमारे जीवन नही बन पा रहे हैं। जीवन से ही दूसरे के जीवन की ज्योति जलती है। वेद का अमर सन्देश है– **यो जागार तं ऋचाः कामयन्ते** जो जागता है उसे ही सत्यज्ञान तथा आत्मज्ञान प्राप्त होता है।

शिवरात्रि आत्मज्ञान का पर्व है। सत्य को जानने और खोजने का पर्व है। शिवरात्रि सच्चे शिव के साथ जुड़ने का सन्देश देती है। जड़ पूजा से चेतन पूजा की ओर चलो। बाहर की दुनिया से अन्दर की दुनिया में आओ। उठो। जागो। अपने जीवन तथा जगत को संभालो। जीवन बड़ी तेजी से व्यर्थ की बातों, विवादों, उलझनों और भोगों में गुजरा जा रहा है। मानव जीवन को प्राप्त करने के बाद भी जीवन को उद्देश्यहीन बनाकर जिया तो उपनिषद के शब्दों में महती विनष्ठि, इससे बढ़कर जीवन की हानि व विनाश और कुछ नही हैं। आज हम इतने भौतिकवादी, भोगवादी, तथा अज्ञानी हो रहे हैं कि पर्व, वेदकंथाए, उपदेश, प्रवचन, सम्मेलन आदि आते हैं इनमे बाह्य, धूमधाम, दिखावट, बनावट, प्रदर्शन आदि खूब होता है, आत्मचेतना, आत्मसुधार तथा जनकल्याण का भाव जाग्रत नही दिखाई देता है। भोजन वही सार्थक होता है जो शरीर को लग जाय। उपदेश वही माना जाता है जो जीवन विचार तथा आचरण को बदल दे। शिवरात्रि पूछ रही हैं–मूलशंकर को तो बोध हो गया, तुम्हें कब बोध होगा? हम कब अपना बोध दिवस मनायेगें। जिस दिन हम अपना बोध दिवस मनायेंगे। उसी दिन हमारी सच्ची शिवरात्रि होगी।

यह बोधोत्सव का पर्व हमे जगाने, संभलने, कर्तव्यबोध तथा कुछ करने के लिए प्रेरित कर रहा है। आर्यो! ऋषिभक्तो! उठो! जागो! अपने को संभालो। संभालो! संगठित हो जाओ। मिलकर बैठो, सोचो और मिलकर चलो। अपने कर्तव्य और दायित्व को समझो। अपनी विरासत और वसीयत संभालो। ऋषि के जीवन से प्रेरणा लो। ऐसा प्रेरक, आदर्श, सर्वस्व स्वामी, और आजीवन विषपायी महापुरूष इतिहास में न मिलेगा। संसार हमारी और देख रहा हैं। हम व्यर्थ के विवादों में क्यों उलझ रहे हैं। विवादों को छोड़ो, संवादो को पकड़ो। ऋषि ने जिस उद्देश्य प्रयोजन और कार्यों के लिए आर्यसमाज बनाया था उस पर गंभीरता से चिन्तन मनन और कार्य करने की प्रेरणा शिवरात्रि दे रही है। क्या हम शिवरात्रि का सन्देश सुनकर अपने जीवन व कर्तव्य का बोध करेंगे? क्या शिवरात्रि पर आत्मचिन्तन करके ऋषि मिशन के लिए ईमानदारी, व सेवाभाव से सहयोगी बनने का व्रत व संकल्प लेंगे? तभी सच्चे अर्थ में शिवरात्रि मनाने की उपयोगिता, सार्थकता और व्यवहारिकता हैं। यही शिवरात्रि का सन्देश हैं।

With Best Compliments From :

KAMAL PLASTOMET

930/1, Behrampur Road, Village Khandsa, Gurgaon-122 001 (Haryana), Tel. : 0124-4034471, E-mail : krigurgaon@rediffmail.com

महर्षि का मन्तव्य

—डा० रविदत्त आचार्य

महर्षि दयानन्द विकासवादी विचारधारा वाले संन्यासी थे। मोक्षप्राप्ति की अपेक्षा उन्हें मानवसुधार अधिक प्रिय था। सर्वांगीण उन्नति की दृष्टि से उन्होंने एक आन्दोलन छेड़ा और उस पवित्र यज्ञ की आहुति में अपना सर्वस्व अर्पित किया। उनका मानना था कि मनुष्य को पहले ईश्वर का, पश्चात् धर्म का ज्ञान होना चाहिए। बिना ईश्वर और धर्म को जाने मनुष्य अपने कर्तव्य को ठीक से नही समझ पायेगा। मानव जीवन की सार्थकता ईश्वरीय ज्ञान से हैं। तत्कालीन अन्धविश्वास उन्हें बहुत खटकता था, इसी कारण उस समय फैली कुरीतियों व रूढ़ियों को जड़ से उखाड़ने का भरसक प्रयत्न किया। उन्होने अपने को एक आदर्श समाजसुधारक एवं मार्गदर्शक के रूप में प्रस्तुत किया, महत्वकांक्षा का कहीं भी स्पर्श प्रतीत नहीं होता। उनका समग्र जीवन वैदिक सिद्धांतो के परिपालन का एक नमूना हैं। सत्यार्थप्रकाश की भूमिका की निम्नलिखित पंक्तियां अवलोकनीय हैं—

"जैसा मै पुराण, जैनियों के ग्रन्थ, बाबबल और कुरान को प्रथम ही बुरी दृष्टि से न देखकर उनमें गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग तथा अन्य मनुष्य जाति की उन्नति के लिये प्रस्तुत हूं वैसा सबको करना योग्य हैं।"

मानव के विकास में बाधक तत्वों को खुल्लमखुल्ला संसार के सामने लाकर रख दिया। सत्यार्थप्रकाश को अच्छी तरह पढ़ने के पश्चात् पाठक एक सक्षम सुधारक बन सकता है। समाज में फैले हुए रोगों का लक्षण उपचार तथा बचाव भली भांति स्पष्ट कर दिया हैं। अवसरवादी ठग जनसाधारण को जिस गति से पथभ्रष्ट कर रहे थे, उनसे भी सतर्क कर दिया। बिना शिक्षा प्राप्ति किये सबके गुरू बनकर सम्मोहन व उच्चाटन आदि दुष्कर्मों में उलझे हुए थे। द्वितीय समुल्लास में इस ओर संकेत कर दिया है उसे पढ़कर पाखंडियों व ढोंगियों को सरलता से परास्त कर सकते हैं। यदि हम वास्तविक रूप में आर्य हैं तो पाठ तक ही सीमित क्यों रह जाते हैं। पाखण्डी को पराभूत करना आर्य का कर्तव्य है। मात्र पढ़ने से बुराई को समाप्त नहीं किया जा सकता, कुछ क्रियात्मक कदम उठाना ही पड़ेगा। ऋषि के उद्‌गारों को यदि रचनात्मक रूप नहीं देते तो हम ऋषि ऋण से उऋण नहीं होंगे यदि कुरीतियों का समर्थन करते रहे तो ऋषि के ग्रंथों को पढ़कर भी हम समाज की काया पलट नहीं कर पायेंगे। जिस बस्ती में हम रहते हैं यदि उसमें हम आंखे बन्द कर लें तो आर्यत्व कितने प्रतिशत रह जायेगा, आर्यजन स्वयं ही आंकलन कर लें। ऋषि ने हमको निर्देश किया है कि जहां भी कूडा देखो वहीं झाड़ू लगाओ। सत्यार्थप्रकाश का पाठक अपने आपको एक कुशल एवं सक्षम उपदेशक समझे तो ऋषि के मन्तव्यों की परम्परा कायम रह सकती है और यदि आर्य बन्धु इस दायित्व को स्वीकार कर लें तो सुधार होकर रहेगा। इस सम्बन्ध में कभी भी नकारात्मक चिन्तन न करें, हम सुधारक हैं सुधार की व्यवस्था करें।

यदि हम एक दूसरे की ओर देखते रहेंगे तो पाखण्ड का बोलबाला रहेगा। भले ही हम कोठरी में बैठकर महर्षि दयानन्द की जय बोलते रहें। उत्सवों मे नारों की भरमार होती है। परन्तु क्या रचनात्मक कदम भी कोई उठाता है। जनता बराबर ठगी जा रही है और आर्यजन केवल नारों से ही अपने आपको कृतकृत्य मान लेते हैं। वर्ष भर में हम यदि एक

परिवार को भी आर्य बना लेते हैं तो यह उद्घोष एवं जयघोष से कही बढ़कर हैं। सुधार व्यक्ति का करना हैं और व्यक्ति पर कुछ प्रयोग किये बिना परिवर्तन असंभव हैं। नारे उतेजक होते हैं सुधारक नहीं।

प्रत्येक आर्य की एक प्रयोगशाला होनी चाहिये साथ ही उसका कुछ कार्यक्षेत्र भी निर्धारित हो, फिर सैद्धांतिक कार्यक्रमों का संचालन नियमित रूप से किया जाय तो एक दिन निश्चय ही सफलता मिलेगी। आज दुर्व्यसनों की उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है। मनुष्य जाति का दुर्व्यसनों से बचना आवश्यक हैं। परिवारों में सिद्धान्तों का प्रचलन जारी करने के लिये अनेक विध उपाय करने होंगे। स्वाध्याय में रुचि उत्पन्न करने के लिए आर्षग्रंथो को पहुंचाना और परिवारो में **बार बार जाकर वैसी ही वार्ता करना, पढ़कर सुनाना तथा स्वाध्याय का लाभ बताना होगा। ऋर्षि वेदज्ञान के शिक्षक थे, हमें भी शिक्षक बनना होगा। सत्संगो में आर्षग्रंथो की चर्चा व प्रेरणा अवश्व करनी चाहिये। ऋषि के प्रवचन व शास्त्रार्थ बहुत महत्वपूर्ण हैं। उनके विचारों को पढ़कर हम सभी प्रकार की शंकाओ का समाधान कर सकते हैं। विशेष बात यह है कि बार बार पाठ करने से ही सिद्धान्त की जानकारी होती है।** सरसरी निगाह से देखने पर कुछ पता नहीं लगता। सत्यार्थप्रकाश व संस्कारविधि को ही लें तो अनेक बार गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करना होगा, अन्यथा कमजोरी ही बनी रहेगी, जैसे एक छात्र किसी विषय को ध्यान से नहीं पढ़ता तो वह विषय उसके लिये दुरूह बना रहता हैं। कठिन और सरल कुछ नहीं होता, यह हमारे अध्यवसाय पर निर्भर हैं। सिद्धान्त को बिना समझे व्यवहार में नहीं लाया जा सकता। **यदि हम ऋषि के प्रति अपना कुछ कर्तव्य समझते हैं तो हमें अपना कुछ समय ऋषिकृत ग्रंथों के स्वाध्याय में लगाना ही होगा।** स्वाध्याय के लिये हम किन ग्रंथो का चयन करें, सत्यार्थप्रकाश का तृतीय समुल्लास देंखें।

गूढ़ रहस्यों को जानने के लिये आध्यात्मिक क्रियाएं अनिवार्य हैं। प्राणायाम ध्यानादि करने से ही आध्यात्मिक रहस्य खुलते हैं। ऋषि ने आत्मशक्ति को ध्यानयोग से पुष्ट किया था। सत्यार्थप्रकाश के 11–12–13–14 समुल्लासों में स्वार्थीजनों का आरोप हैं कि दूसरें मतों की त्रुटिया क्यों उजागर की गयी? यह केवल आरोप हैं। इस सम्बन्ध में ऋषि हृदय के उद्गारों को जानलेना जरूरी हैं। उत्तरार्द्ध अनुभूमिका में उन्होंने स्पष्ट लिखा हैं–

"जब तक इस मनुष्यजाति में परस्पर मिथ्या मतमतान्तर का विरूद्धवाद न छूटेगा तब तक अन्योन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विशेष विद्वतजन ईर्ष्या द्वेष छोड़ सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहें तो हमारे लिये यह बात असाध्य नहीं हैं।"

मत पन्थों के चलानेवालों ने अपने स्वार्थ व प्रयोजन को सिद्ध करने के लिये असत्य का सहारा लिया तथा जनसधारण के प्रयोजन को सर्वथा नकार दिया। ऐसे मिथ्यावादी लोग **अपने अनुयायियों को इतना पंगु बना देते हैं कि बिना गुरू के एक पग भी न चल सकें। दूसरा कमाल उन्होंने यह किया हैं कि उनके रहते ईश्वर की कोई जरूरत नहीं।** मोहम्मद–ईसा–साई–स्वामी नारायण आदि ने स्वयं ईश्वर का पद लिया हुआ था, किन्तु महर्षि ने अपने आप को ईश्वर का उपासक बनाकर सबको ईश्वर को जानने तथा मानने की प्रेरणा दी और ईश्वर

को सर्वशक्तिमान सिद्ध किया। सबके प्रयोजन को सिद्ध करने वाले सिद्धांतो का प्रचार किया। गुरू शिष्यों में समता स्थापित की। गुरू की महता इसी में थी कि वह शिष्यों को वेदशांस्त्रों का ज्ञान देवे और यथार्थ को स्पष्ट करें। वेदज्ञान के बिना यदि गुरू भी भटका हुआ हैं तो शिष्यों को कैसे यथार्थ ज्ञान करायेगा? ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में इस ओर संकेत किया हैं–

"सम्पूर्ण विद्याओं के मूल वेदों को बिना पढ़े किसी मनुष्य को यथावत् ज्ञान नही हो सकता। इसलियें सब मनुष्य को वेदादि शास्त्र अर्थज्ञान सहित अवश्य पढ़ने चाहिये।" (ऋ. भा. भू. पठनपाठन विषय)

तथ्यों को ठीक प्रकार से समझने के लिये सब विद्याओं के मूल वेद का ही सहारा लेना पड़ेगा। ईश्वर तथा धर्म के वास्तविक स्वरूप का वेदाध्ययन से ही पता चलेगा। वेद का मंत्र स्पष्ट कर देता है कि ईश्वर जीव प्रकृति ये तीन अनादि है। पक्षियों एवं वृक्ष के उदाहरण से इसे समझाया गया है। एक पेड़ पर दो पक्षी बैठे हुऐ हैं एक पक्षी वृक्ष के स्वादु फलों को खा रहा हैं, दूसरा केवल देख रहा है। जीवात्मा परमात्मा दो पक्षी हैं पेड़ प्रकृति है। जीव प्रकृति का उपभोग करता हैं, ईश्वर द्रष्टा है।

"द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।

तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्तयनश्नत्रन्यो अभिचाक रीति।।

अष्टम समुल्लास में सृष्टि उत्पति व प्रलय को समझाते हुए ऋषि ने उक्त मन्त्र को उद्धत किया है। यह त्रैतवाद का सिद्धान्त उन्होंने वेदो से खोजकर सबके सामने रख दिया। अभी तक इतनी भ्रांति फैली हुई हैं कि लोग ईश्वर को ही जगत का उपादान कारण मानते हैं। त्रैतवाद को न मानने पर भ्रांति ही बनी रहेगी। इसी मान्यता के आधार पर मनुष्यों के कर्तव्यों का निर्धारण किया गया है। प्रकृति का उपभोग किया जाता है तथा ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना की जाती है। आर्यसमाज के दूसरे नियम में इसे स्पष्ट कर दिया गया है। तीसरे नियम में बताया गया है। कि वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है। वेद का स्वाध्याय, अनुशीलन तथा प्रचार ही परमधर्म हैं। अब कोई सन्देह नहीं रह जाता कि मनुष्य का धर्म क्या है। वेदानुकूल आचरण व व्यवहार करना ही धर्म है।

यदि किसी को मोक्ष के विषय में जानना हो तो सत्यार्थप्रकाश का नवम समुल्लास अवलोकनीय है। इस सम्बन्ध में बताया गया है। कि योग साधना से ही मोक्ष संभव है चित्तवृत्तियों का निरोध करने पर ही आत्मा के वास्तविक स्परूप का पता चलता है। मोक्ष प्राप्ति को सबसे बड़ा पुरूषार्थ स्वीकार किया है। सांख्यदर्शन को सूत्र उद्धृत करते हुए इसी विषय को स्पष्ट किया गया है–

"त्रिविधदुःखात्यन्त निवृत्तिरत्यन्त पुरूषार्थः" त्रिविध दुखो से छूट कर मोक्ष प्राप्त करना ही पुरूषार्थ की पराकाष्ठा है।

अन्त में मै इतना कहना चाहूंगा किसी भी विषय को समझने के लिये सत्यार्थप्रकाश प्रथम गाइड है, ऋषि के मन्तव्यों को समझने के लिए सर्वप्रथम सत्यार्थप्रकाश को गम्भीरतापूर्वक पढ़ें, फिर अपने आप मार्ग मिलता चला जायेगा। यही आर्य जीवन की सफलता है। अपने जीवन को मनमाने ढंग से न चलाकर ऋषियों के सिद्धान्तों का अवलम्बन करें। ऋषि का यही मन्तव्य है कि हम आर्षपद्धति से जीवनयापन करें।

ईश्वर के स्वरूप को जानो

—श्री ओमप्रकाश अग्रवाल

अगर किसी को देखना हो तो उसकी बनाई चीजो को देखना चाहिए। अगर ईश्वर के बारे में जानकारी चाहते हो तो उसकी बनी सृष्टि को देखना चाहिए। ईश्वर सीधा किसी के पास नही आता। वो अपने भीतर ही हैं। उसकी लीला को देखा समझा जा सकता हैं। आप पानी की व्यवस्था को ही देखे तो पता चलेगा कि कितना जबरदस्त उसका इन्तजाम हैं। पानी के बिना संसार चल नही सकता। पहाड़ो पर पानी ज्यादा बरसता हैं। मगर टिक नही सकता। उसके लिए ईश्वर ने पहाड़ो पर स्त्रोत बनाए। बर्फ पिघलती रहती हैं। सर्दी में पानी की जरूरत कम होती हैं। तो बर्फ बनती रहती हैं। फिर धीर धीरे पानी नदी नालों से नीचे की ओर आता हैं। और आखिर में उसी में लीन हो जाता हैं। जहाँ उसकी मंजिल समुद्र होती हैं। फिर बादल बनते हैं। और वर्षा होती हैं। और वही क्रम बनता चला जाता हैं।

फिर सरकार को कहो हिमालय पर पानी की कुछ मात्रा डाल दे तो क्या डाल सकता हैं? नही डाल सकता। सारी दुनिया का पेट्रोल एक दिन मे खर्च भी किया जाए तो भी कोई हिमालय पर बर्फ नही जमा सकता। ईश्वर का विधान ही है कि सूर्य और ड्यूटी पर रोज आता हैं। बिना भेदभाव किए चोर और साधु सब को एक साथ अपनी रोशनी देता हैं। ईश्वर के घर में कोई भेदभाव नही हैं। चीटी बनाई उसमें भी चलने फिरने की मशीन लगा दी। कहते हैं कि मच्छर मे वजन नही होता फिर भी वो उड़ता हैं, बोलता है, अपनी जीविका बनाता हैं, सन्तान भी पैदा करता है। कोई साईसदान ऐसा पैदा हो मशीन भी बनाए, वजन भी ना हो। हाथी बनाया जिसको मन भर खाने के लिए रोज चाहिए, मगर सब कुछ चल रहा हैं हमारे वेद हमको बहुत बाते बताते हैं आर्य समाजी ईश्वर को नही मानते, ऐसा नही सोचना चाहिए। यह गलत धारणा हैं ईश्वर को जानकर मानो। पहले ईश्वर को जान लों। जिसने कपड़े रंग लिए उसी के पीछे हो लिए, किसी ने कहा तू ऐसा कर, वैसा करने लग गए। यह तरीका ठीक नही हैं। चलते फिरते मानव की सेवा करना ज्यादा अच्छा लगता हैं दान करना अच्छी बाता हैं। उससे भी ज्यादा अच्छा हैं गन्दी कमाई न करो। विचार करो, सही क्या हैं? खुद विचार करो। ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जान लेने से बहुत लाभ मिलेगा। गीता में यही लिखा हैं—

संसार मे कर्मशील बनो। ईश्वर को ईधर उधर मत देखो तो मंजिल आसान हो जाएगी।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून द्वारा मई 2016 में पवमान पत्रिका विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है जिसके लिए विज्ञापनों की आवश्यकता है। आपसे विनम्र निवेदन है कि इस पुनीत कार्य में सहयोग देने की कृपा करें। विज्ञापन के रेट निम्नलिखित हैं।

1.	कलर्ड फुल पेज	रु. 5000
2.	ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज	रु. 2000
3.	ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज	रु. 1000

महर्षि की देश वन्दना

—गजानन्द आर्य, प्रधान, परोपकारिणी सभा

"यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूँ तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूँ वैसे ही दूसरे देशस्थ व मत वालों के साथ भी वर्तता हूँ।"

किसी वीतरांग संन्यासी के इन शब्दों से यह भ्रम हो जाना स्वाभाविक हैं कि ऐसा संन्यासी देश विदेश के लिए अधिक क्या लिखेगा? सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में लिखे इस भ्रम का निराकरण सहज ही हो जाता है जब हम तत्कालीन ब्रह्म समाज और प्रार्थना समाज के कार्यो पर लेखक के विचार पढ़ते हैं। ब्रह्म समाज और प्रार्थना समाज की अंग्रेज भक्ति पर आक्रोश करते हुए ऋषि लिखते हैं— इन लोगो में स्वदेश भक्ति बहुत न्यून है। ईसाईयों के आवरण बहुत से ले लिये हैं। अपने देश की प्रशंसा अथवा पूर्वजों की प्रशंसा करनी तो दूर वे तो उनकी भर पेट निन्दा करते हैं वे कहते हैं कि अंग्रेजों के अतिरिक्त तो सृष्टि मे आज पर्यन्त कोई भी विद्वान हुआ ही नहीं। आर्यावर्तीय लोग सदा से मूर्ख ही थे, इनकी उन्नति कभी नहीं हुई।

निश्चय ही देश के स्वाभिमानी नागरिक के लिए ये मान्यताएं अपमानजनक हैं। इस प्रकार की मान्यता रखने वाले स्वदेश भक्त नहीं बल्कि विधर्मियों के चाटुकार और खुशामदी कहें जा सकते हैं। सत्यार्थ प्रकाश में इन लोगों के लिये लिखा गया हैं। ब्रह्मा से लेकर पीछे पीछे आर्यावर्त में बहुत से विद्वान् हो गये हैं। उनकी प्रशंसा न कर यूरोपियन की ही स्तुति में उतर पड़ना पक्षपात और खुशामद के बिना क्या कहा जाए।

इतना सब लिखने के साथ साथ ग्रन्थकार ने एक कर्तव्य बोध कराया हैं। यह बोध हर किसी देश के लिए धारण करने योग्य हैं। "भला, जब आर्यावर्त में उत्पन्न हुए हैं और इसी देश का अन्न जल खाया, पीया, अब भी खाते पीते हैं तब अपने माता पिता पितामहादि के मार्ग को छोड़कर दूसरे विदेशी मतों पर अधिक झुक जाना इंगलिश भाषा पढ़के पंडिताभिमानी होकर झटिति एक मत चलाने में प्रवृत्त हुए मनुष्यों का स्थिर और वृद्धिकारक काम क्यों कर हो सकता हैं।"

देश के प्रति समर्पित ऋषि की यह देश वन्दना बहुत सरल हृदय से लिखी गई हैं। उनकी इस वन्दना में कही कोई छल कपट पक्षपात और तुष्टीकरण की गंध नही हैं। पूरे ग्रन्थ में बिखरे हुए ऋषि के वाक्यो को एक कड़ी में गूँथने का यहाँ प्रयास हैं।

सृष्टि के आदि में मानव जिस धरती पर उत्पन्न हुआ वह स्थान था तिब्बत। तिब्बत में पैदा होने वालों में आर्य भी और दस्यु भी। स्वभाव के कारण उनके आर्य और दस्यु नाम हो गये थे। उनका आपस में बहुत विरोध बढ़ चला तब आर्यलोग उस स्थान को छोड़कर सीधे इसी स्थान पर पहुँचे और उसको अपना प्यारा सा नाम दिया आर्यावर्त। जो लोग कहते हैं कि आर्य लोग ईरान आदि देशों से आकर बसे और उन्होने यहाँ के मूल निवासी गोड़ भील आदि को भगाकर इस भूभाग पर अधिकार किया है वे मानव इतिहास से अनभिज्ञ है। यह अर्वाचीन लेखको की अपनी कल्पना है, जो मान्य नहीं है। इन लेखकों के पास इस बात का कोई उत्तर नहीं है कि विदेशी शासकों ने अपनी तरह यहाँ के मूल निवासी आर्यो को भी विदेशी सिद्ध करने की चालें चली थी। इस चाल को

यदि सर्वप्रथम किसी ने समझा है तो सत्यार्थ प्रकाश के लेखक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने। उन्होने डंके की चोट विदेशियों के इस प्रचार का खंडन किया। खेद तो यह है कि भारतीय नेता ओर इतिहासकार विदेशियों की हाँ में हाँ मिलाते रहे हैं। जिसका परिणाम है कि बाहर से आये आक्रमणकारी अब आर्यों को भी आक्रमणकारी कहने लगे हैं। इस आर्यावर्त की सीमा उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विंध्याचल, पश्चिम में अटक और पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी थी। इसका एक स्पष्टीकरण आवश्यक हैं विंध्याचल के नाम से वर्तमान स्थान जो प्रसिद्ध हैं, वह देश की मध्यवर्ती पहाड़ियों की श्रृंखला थी और वह समुद्र के पास रामेश्वरम तक पहुंची हुई थी। कुछ इतिहासकार इसको पृथक सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं, वह निराधार है। आर्यावर्त के दक्षिण में राक्षसों का राज्य हुआ हैं, कालान्तर में राम रावण का प्रसिद्ध युद्ध हुआ, जिसमें वहाँ के राजा रावण को मारकर राम ने रावण के भाई को सिंहासन पर बिठाया।

आर्यावर्त के उत्तर में हिमालय के उस पार असुरों का साम्राज्य था। हिमालय प्रदेश मे स्थित देवों के असुरों के साथ युद्ध होते थे। उसी को देवासुर संग्राम कहते हैं। इस प्रकार के एक संग्राम में महाराज दशरथ ने भी देवों का साथ दिया था और महारानी कैकेयी की धनुर्विद्या और युद्ध कौशल उसी युद्ध में प्रसिद्ध हुआ था। यहाँ का अस्त्र शस्त्र विज्ञान भी बहुत उच्चकोटि का था। शत्रुओं से लड़ने के लिये आग्नेयास्त्र शत्रुओ को जकड़ देने वाला नागपाश और मूर्छित करने वाला मोहनास्त्र अभी तक कोई नही बना पाया हैं। जिसको आजकल तोप और बन्दूक कहते हैं। संस्कृत में उसे शतघ्नी और भुशुण्डी कहा जाता था।

आर्यों का चक्रवर्ती साम्राज्य

आर्यावर्त का तत्कालीन इतिहास और भूगोल महाराज मनु द्वारा प्रणीत मनुस्मृति में है। मनुस्मृति में देश का विधान भी लिखा गया है। महाराज मनु के पूर्वज ब्रह्मा और विराट हुए है। सृष्टि के आदि में ईश्वर द्वारा दिया गया वेद ज्ञान चार ऋषियों के माध्यम से ब्रह्मा को प्राप्त हुआ है। ब्रह्मा से विराट और मनु तक पहुंचता पहुंचता वह वेदज्ञान समस्त आर्यावर्त में फैल गया। आर्यावर्त के पहले राजा महाराजा स्वयंभू हुए हैं। स्वयंभू से इक्ष्वाकु तक आर्यावर्त संसार का चक्रवर्ती साम्राज्य बन गया था। समस्त विश्व में आर्य लोगों का शासन था।

आर्यावर्त की विशेषतायें

आर्यावर्त देश की विशेषताओं पर ऋषि लिखते हैः

आर्यवर शिरोमणि महाशय ऋषि महर्षि राजे महाराजे लोग बहुत सा होम करते और कराते थे। जब तक इस होम करने का प्रचार रहा, तब तक आर्यावर्त देश रोगों से रहित और सुखो से पूरित था। जब आर्यो का राज्य था तब देश में महोपकारण गाय आदि पशु नही मारे जाते थे तभी आर्यावर्त वा अन्य भूगोल देशों में बड़े आनन्द में मनुष्यादि प्राणी वर्तते थे, क्योंकि दूध घी गाय बैल आदि पशुओं की बहुताई होने से अन्न रस पुष्कल प्राप्त होते थे। संसार की स्वाभाविक प्रवृति हैं कि जब बहुत सा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है तब आलस्य, पुरूषार्थ रहितता, ईर्ष्या, द्वेष, विषयाशक्ति और प्रमाद बढ़ता है। इससे देश में विद्या सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुण और दुष्ट व्यसन बढ़ जाते हैं।

ग्रन्थकार का यह चिन्तन आर्यावर्त की स्थिति के सन्दर्भ मे है।

एक स्थान पर ऋषि लिखते हैं–यह निश्चय है कि जितनी विद्या और मत भूगोल मे फैलें हैं वे सब आर्यावर्त देश ही से प्रचारित हुए हैं। देखो! एक जैवालियट साहब पेरिस अर्थात् फ्रांस देश के निवासी अपनी बाईबिल आफ इण्डिया में लिखते हैं। कि सब विद्या और भलाईयों का

भंडार आर्यावर्त देश हैं। और सब विद्या और मत इसी देश में फैले हैं और परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर! जैसी उन्नति आर्यावर्त देश की पूर्व काल में थी वैसी ही हमारी देश की कीजिए।

ग्रन्थकार ने यहाँ विद्या के साथ साथ मत शब्द का प्रयोग किया गया हैं। संसार में फैले विभिन्न मतमतान्तरों का स्त्रोत हमारा ही देश रहा हैं। संस्कृत की महिमा में ग्रन्थकार ने दाराशिकोह का एक उहाहरण दिया हैं। दाराशिकोह लिखता है– "मैने अरबी आदि बहुत सी भाषाएं पढ़ी परन्तु मेरे मन का सन्देह छूटकर आनन्द न हुआ। जब संस्कृत देखा और सुना तब निःसन्देह होकर मुझ को बड़ा आनन्द हुआ।

"स्वामी शंकराचार्य के समय के राजा सुधन्वा से प्रारम्भ वैदिक मत और देशोन्नति के कार्यों को लेखक ने याद किया है। शंकराचार्य के तीन सौ वर्ष पश्चात् उज्जैन नगरी में विक्रमादित्य को प्रतापी राजा लिखते हुए भर्तृहरि राजा के वैराग्य प्राप्ति की चर्चा की गई है। समयान्तर में राजा भोज हुए जिनके शासन में व्याकरण और काव्य की बहुत उन्नति हुई। महान कवि कालिदास इसी समय की देन थे राजा भोज के समय की शिल्पकला लेखक को इतनी पसन्द है कि शिल्पी लोगों ने घोड़े के आकार का एक यंत्रचालित यान बनाया था जो एक कच्ची घड़ी में ग्यारह कोश और एक घण्टे में साढ़े सत्ताईस कोश जाता था। वह भूमि और अंतरिक्ष में चलता था। दूसरा एक ऐसा पंखा बनाया था कि बिना मनुष्य के चलाये कलायन्त्र के बल से नित्य चला करता और पुष्कल वायु देता था।"

इस प्रशंसनीय शिल्प पर ग्रन्थकार अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हुए लिखता हैं – जो ये दोनो पदार्थ आज तक बने रहते तो यूरोपियन इतने अभिमान में न चढ़ जाते। स्वामी जी को मुस्लिम काल में हुए अपने शिवाजी और गोविन्द सिंह जी पर कम गर्व नहीं है। देश, इतिहास और विद्या पुस्तकों के खोजने की प्रेरणा आर्यसज्जनों को उस सन्दर्भ पर दी गई है। जहाँ महाराजा युधिष्ठिर के पश्चात देश के अन्य राजाओं की सूची उनको श्री नाथद्वारा से प्रकाशित एक पुराने पाक्षिक पत्र में मिली थी। उन्होंने 4158 वर्षों के राजाओ की पीढ़ी और वंश की तालिका अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में प्रकाशित की है।

सुवर्ण भूमि भारत

ऋषि अपने विज्ञान और सम्पन्नता के गौरव को देश की पराधीनता अवस्था में भी उजागर देखना चाहते हैं। काशी के मानस मन्दिर के "शिशुमार चक्र" की चर्चा भी उन्होंने ग्रन्थ में की है कि जयपुराधीश इसकी संभाल करते रहे तब खगोल विद्या की जानकारी प्राप्त होती रहेगी। सम्पन्नता के सन्दर्भ में लिखा गया वाक्य देश की स्तुति की बहुत सुन्दर सूक्ति हैं स्मरण रखने योग्य हैं– यह आर्यावर्त देश ऐसा देश जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। इस देश की भूमि सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है। इसलिए सृष्टि के आदि आर्यलोग इसी देश में आकर बसे जितने भूगोल में देश हैं वे सब देश की प्रशंसा और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है। यह बात तो झूठी है, परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि हैं जिसको लोहे रूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाड्य हो जाते हैं।

सत्यार्थ प्रकाश की यह देश वन्दना उस काल की हैं जब अधिक देश अंग्रेजी सत्ता की प्रशंसा में और लंदन और टेम्स नदी के गुणानुमान में अपने को धन्य समझता था।

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

रायपुर रोड (नालापानी), देहरादून–248008, दूरभाष : 0135–2787001

आत्मकल्याण का स्वर्णिम अवसर

चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ, योग–साधना का विशेष आयोजन

तदनुसारेण 1 मार्च से 21 मार्च 2016 तक

यज्ञ के प्रेरणास्रोत–स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी

यज्ञ के ब्रह्मा– आचार्य विद्यादेव जी

आत्मकल्याण के जिज्ञासुओं के लिए प्रभुकृपा से तपोवन आश्रम के ऊपरी प्रभाग–पहाड़ी पर यह सुन्दर आयोजन किया जा रहा है। सच्चे योग्य तथा समर्थ जिज्ञासु जन पूर्ण उत्साह के साथ श्रद्धा–आस्था समन्वित हुए भाग लेवें। यह आयोजन याज्ञिकों के लिये सर्वथा निःशुल्क होगा। श्रद्धापूर्वक दिया गया सहयोग ही स्वीकार किया जाएगा।

आयोजन में भाग लेने वाले जिज्ञासुओं के लिये अनिवार्य नियम अधोलिखित है–

दिनांक 29 फरवरी 2016 के सायंकाल तक पहुंचना आवश्यक होगा। 1 मार्च 2016 के प्रातः काल के पश्चात् प्रवेश सम्भव नहीं होगा। आयोजन में विधिवत् प्रवेश के पश्चात् मध्य में छोड़कर जाना सम्भव नहीं होगा। अधोलिखित सभी कार्यक्रमों में भाग लेना अपरिहार्य होगा, अर्थात सामर्थ्यवान प्रतिभागी ही प्रवेश पा सकेंगे। पूर्णकालिक निवास आश्रम परिसर में ही रहेगा, आयोजन काल में बाहर जाने की छूट नित्यान्त नहीं होगी। आश्रम से बाहर किसी प्रकार का सम्पर्क चलदूरभाष तक से भी करने की अनुमति नहीं होगी। 21 दिन तक सभी प्रकार के बाह्य सम्पर्क बन्द रहेंगे। प्रातः 4 बजे तक उठने, प्राणायाम, आसनादि में बैठने का अभ्यास अभी से अपने घर पर करते रहें ताकि यहां आकर बैठने में कष्ट की अनुभूति न हो। सभी नियमों का विधिवत पालन करते हुए अनुशासित रहना होगा।

विशेष– अपना बिस्तर, थाली, कटोरी, गिलास, चम्मच चाकू, टार्च, कापी, पेन आदि साथ। यथा सम्भव चारों वेद भाष्य भी लावें। आप इष्ट मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।

कार्यक्रम सारिणी

प्रातः जागरण	3–4 के मध्य
योग साधना, आसन प्राणायाम, ध्यानादि	4 से 7 बजे प्रातः
यज्ञ प्रातः काल	7:30 से 9:30
प्रातः प्रातराश	9.30 से 10.00
सेवायोग	10.00 से 11.00 पूर्वाह्न
भोजन–विश्राम	11 बजे से 1 बजे अपराह्न
वेद का पठन–पाठन	1.00 बजे से 3.00 बजे
यज्ञ–सायंकाल	3.30 से 5.30 सायं
साधना	6.00 से 8.00 बजे रात्रि
भोजन रात्रि	9.00 बजे तक
रात्रि– शयन	10.00 से 3.00 बजे

दिनांक 19, 20 एवं 21 मार्च को गायत्री यज्ञ भी होगा जिसमें बाह्य व्यक्ति भी भाग ले सकेंगे।

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री	**ई. प्रेम प्रकाश शर्मा**	**संतोष रहेजा**
अध्यक्ष–09710033799	सचिव–09412051586	उपाध्यक्षा–09910720157

ओ३म

विद्ययाऽमृतश्नुते
सत्यार्थप्रकाश स्वाध्याय शिविर

29 मार्च से 4 अप्रैल 2016 तक

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

रायपुर रोड (नालापानी), देहरादून–248008, दूरभाष : 0135–2787001

मान्यवर,

सादर नमस्ते, जैसा कि आप जानते ही हैं कि महर्षि दयानन्द जी द्वारा मानव मात्र के कल्याण हेतु सत्यार्थप्रकाश रूपी महान ग्रन्थ की संरचना की गई है।

इस ग्रन्थ के साधनोपयोगी नवमें समुल्लास को अध्ययन–अध्यापन द्वारा इस शिविर में विशेष रूप से आत्मसात् कराया जायेगा। नवमां समुल्लास विद्या–अविद्या व बन्ध–मोक्ष विषय को गहराई से समझने के लिये ध्यान साधना की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्रायः स्वाध्याय प्रेमी महानुभाव ऐसे शिविरों से लाभ प्राप्त कर ज्ञानपूर्वक साधनापथ पर अग्रसर हो सकते है।

1. इस शिविर में समस्त प्रशिक्षण एवं अध्यापन आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य के सानिध्य में होगा। कृपया अपने साथ 'सत्यार्थ– प्रकाश' अवश्य लायें।
2. शुल्क– इस ईश्वरीय कार्य में प्रत्येक प्रतिभागी द्वारा भावनापूर्वक स्वैच्छिक सहयोग देना अनिवार्य है।
3. शिविर में स्थान सीमित होने के कारण भाग लेने के इच्छुक महानुभावों से अनुरोध है कि वे अपना पंजीकरण यथाशीघ्र करा लेवें।

पंजीकरण हेतु 1. श्री नंदकिशोर अरोड़ा जी, दिल्ली (09310444170) समयः दिन में 10 बजे से सायं 4 बजे तक, रात्रि 8 से 10 बजे तक 2. श्री तेजपाल सिंह जी, मुजफ्फरनगर (09412406517) से प्रातः 10 से सायं 4 बजे तक सम्पर्क कर सकते है। आश्रम में आने वाले अतिथि महानुभाव भी स्थान की उपलब्धता के अनुसार कक्षाओं में भाग लेकर लाभ उठा सकेंगे परन्तु कक्षा में आचार्य जी से चर्चा करने एवं प्रश्नोत्तर करने के अधिकारी शिविर में विधिवत भाग लेने वाले प्रतिभागी ही होंगे।

स्थानीय महानुभावों से भी निवेदन है कि वे यथासंभव अपनी अनुकूलतानुसार अवश्य ही लाभ उठावें।

कक्षा विवरण निम्नलिखित प्रकार से है–

कक्षा 1– प्रातः 10.15 से 12.15– सत्यार्थ प्रकाश नवमां समुल्लास

कक्षा 2– मध्याह्नोत्तर 2.45 से 4.00– सत्यार्थ प्रकाश नवमां समुल्लास

प्रातः सायं ध्यान, साधना, प्रतिभागी व्यक्तिगत रूप से करेंगे।

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री	**ई. प्रेम प्रकाश शर्मा**	**संतोष रहेजा**
अध्यक्ष–09710033799	सचिव–09412051586	उपाध्यक्षा–09910720157

वैदिक साधन आश्रम तपोवन को दान देने वाले दानदाताओं की सूची

क्र.स.	नाम	धनराशि
1.	महेन्द्र सिंह जी, दिल्ली	501
2.	धीरेन्द्र मोहन सचदेवा, देहरादून	2100
3.	श्री सत्यवीर धनखड़, सोनीपत	1111
4.	श्री रक्षा देव, हरियाणा	1000
5.	श्रीमती सुन्दरशान्ता चड्ढा, नई दिल्ली	5000
6.	स्वामी चितेश्वरानन्द जी, धोलास आश्रम	1000
7.	माता सुनन्दा जी, धोलास आश्रम	500
8.	श्री ज्ञान मुनि जी, तपोवन आश्रम	1100
9.	श्री वेदपाल सिंह आर्य, नंगला सलारु	2100
10.	श्रीमती सरोज यति वैश्य, मुरादाबाद	500
11.	श्रीमती लीलावति आर्या, तपोवन आश्रम	500
12.	श्रीमती एवं श्री राम भज दत्ता, देहरादून	3100
13.	श्री कौशल किशोर पाण्डेय, गाजियाबाद	2011
14.	श्रीमती रश्मि यति जी, दिल्ली	1100
15.	श्री सत्यपाल सिंह, नंगला सलारु	1001
16.	श्री दयानन्द जी, चांदपुर, देहरादून	500
17.	श्री एवं श्रीमती ओमप्रकाश पालीवाल, आगरा	5100
18.	श्री मनमोहन जोशी जी, दिल्ली	3100
19.	श्रीमती सुधा वर्मा, दिल्ली	1100
20.	श्रीमती स्नेहलता जी, ग्रेटर नौएडा	1100
21.	श्रीमती पूर्णा देवी, ग्रेटर नौएडा	1100
22.	श्रीमती सत्यवति जी, ग्रेटर नौएडा	1100
23.	श्रीमती पुष्पा जी, ग्रेटर नौएडा	1100
24.	श्रीमती कमला देवी, कैथल	500
25.	माता नरेन्द्र आर्या बब्बर, तपोवन आश्रम	2100
26.	श्री देव पाहवा जी, दिल्ली	2100
27.	श्री गुरु प्रसाद राणाकोटि, ऋषिकेश	500
28.	श्रीमती प्रणीति कटारिया, जयपुर	500
29.	श्री विश्वबन्धु आर्य, जयपुर	500
30.	श्री चन्द्रप्रकाश आर्य, जयपुर	500
31.	श्री ओम प्रकाश सोनी एवं श्री आनन्द सोनी, जयपुर	1001
32.	श्री सतीश कालरा, नई दिल्ली	500
33.	श्रीमती राधा रानी, नई दिल्ली	1200
34.	श्री महेन्द्र आर्य, नई दिल्ली	1100
35.	श्री रमेशदत्त दीक्षित, बागपत	6000
36.	श्री इन्द्रदेव गुप्ता जी, नौएडा	1200
37.	श्रीमती एवं श्री श्याम सुन्दर सोनी, गुड़गांव	15000
38.	श्री जगदीश मदान जी, जगाधरी	1100
39.	श्रीमती सुधेश धवन, तपोवन आश्रम	2100
40.	श्री एस.पी. सिंह, देहरादून	1000
41.	श्री ज्ञान चन्द अरोड़ा, तपोवन आश्रम	1100
42.	डा० महेश कुमार शर्मा, देहरादून	1100
43.	श्री जितेन्द्र सिंह तोमर, देहरादून	501
44.	श्री रणजीत राय कपूर, देहरादून	1100
45.	श्री ज्ञानशील गुप्ता, देहरादून	1500
46.	श्री जगन्नाथ प्रसाद, आगरा	601
47.	सूबेदार मेजर एस.पी. सिंह चौहान, देहरादून	501
48.	श्रीमती हेमलता दीक्षित, देहरादून	1000
49.	श्री राजीव कुमार, देहरादून	1100
50.	आचार्य महावीर सिंह शास्त्री, नई दिल्ली	501
51.	श्री देव प्रकाश पाहवा जी, नई दिल्ली	6000
52.	आचार्य हुकम सिंह भारती, आगरा	5100
53.	श्रीमती उमा वाधवा जी, नई दिल्ली	1100
54.	श्रीमती सरोज मल्होत्रा, नई दिल्ली	1100
55.	श्रीमती सुमन ठक्कर, नई दिल्ली	1001
56.	श्रीमती सुरेन्द्र बुद्धिराजा, नई दिल्ली	5100
57.	श्रीमती अरुणा गुप्ता, देहरादून	500
58.	श्रीमती ईश आहुजा, देहरादून	500
59.	श्रीमती सन्तोष गोयल, देहरादून	500
60.	श्री हरबंस लाल जी, गुड़गांव	2100
61.	श्रीमती राजरानी, गुड़गांव	2100
62.	श्रीमती रतनदेवी आर्या, भिवानी	1100
63.	श्री सुरेन्द्र मदान जी, भिवानी	2100
64.	श्रीमती सत्यावति नान्दल, बोहर	2100

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून सभी दानदाताओं का धन्यवाद करता है।

ओ३म्

'श्रद्धांजलि'

28 जनवरी, 2016 को महाप्रयाण पर

जिसकी कीर्ति है वह मरता नहीं सदैव जीवित रहता है
'ईश्वर–वेद–दयानन्द भक्त, तपस्वी व त्यागी आचार्य बलदेव जी महाराज'

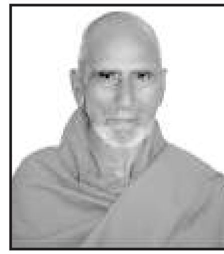

वेद–वेदांग, व्याकरण के पण्डित, कर्मयोगी, तपस्वी, वयोवृद्ध विद्वान, आदर्श चरित्र के धनी, नैष्ठिक ब्रह्मचारी आचार्य बलदेव जी अब नहीं रहे। आज प्रातः 28 जनवरी, 2016 को लगभग 85 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। महात्मा आचार्य बलदेव जी ने अपने जीवन में विद्युत विभाग की अच्छी खासी नौकरी छोड़कर युवावस्था में संस्कृत की आर्श प्रणाली के अध्ययन को अपने जीवन का मुख्य उद्देश्य बनाया था और इसमें कृतकार्य तो हुए ही अपितु एक दीपक की भांति अपनी विद्या के प्रकाश से अनेक प्रमुख विद्वानों व संन्यासियों का जीवन निर्माण कर उन्हें वेदों के प्रकाश से आलोकित किया था। **आर्यजगत के प्रसिद्ध गुरुकुल कालवां–हरियाणा** की आपने स्थापना की थी जो आपका सच्चा स्मारक है। **भारत ही नहीं अपितु विश्व की प्रमुख हस्ती योगाचार्य स्वामी रामदेव जी को आपके शिष्य होने का सौभाग्य व गौरव प्राप्त है।** आदर्श जीवन व चरित्र के धनी आचार्य बलदेव जी का जीवन देश की युवा पीढ़ी के लिए आदर्श है। जीवन की सार्थकता शरीर को स्वस्थ, निरोगी और दीर्घायु बनाने सहित विद्या के क्षेत्र में व्याकरण व वेद–वेदांग का अध्ययन कर व उसका प्रचार कर जीवन को सफल बनाने में है। इसी पथ पर आचार्य बलदेव जी चले थे और यही जीवन शैली मनुष्य जीवन की सर्वोत्तम उन्नति का आधार व साधन रही है व आज भी है।

सभी मानवीय गुणों से पूर्ण व आदर्श आचार्य बलदेव जी का जन्म हरियाणा राज्य के सोनीपत जिले के अन्तर्गत **सरगथल गांव** में लगभग 85 वर्ष पहले (सन् 1930 में) एक धार्मिक माता–पिता के यहां हुआ था। आपकी अल्पायु में माता जी का देहान्त हो जाने पर पिता ने दूसरा विवाह किया। आपकी दूसरी माता जी का भी आपके प्रति अत्यधिक प्रेम व स्नेह था। ग्रामीण वातावरण के अनुसार आपने बी.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद विद्युत विभाग में आपकी नौकरी लग गई। आपका कार्यालय झज्जर में था अतः जब भी आर्यसमाज के प्रसिद्ध गुरुकुल झज्जर में विद्युत सम्बन्धी कोई समस्या आती थी तो आप वहां प्रायः आया जाया करते थे। गुरुकुल में आर्यजगत के शिरोमणी विद्वान व संन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी आचार्य हुआ करते थे। बच्चों को संस्कृत पढ़ते देखकर बलदेव जी में भी इसके प्रति अनुराग उत्पन्न हो गया। गुरुकुल में ब्रह्मचर्य सहित सत्यार्थप्रकाश आदि पुस्तकें लेकर आपने इनका अध्ययन किया। स्वामी ओमानन्द जी के प्रवचनों का भी चमत्कारी प्रभाव आप पर होता था। स्वामी ओमानन्द जी ने भी आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया और अनेक गुरुकुलों की स्थापना की थी जिनमें गुरुकुल झज्जर सहित कन्या गुरुकुल नरेला भी सम्मिलित हैं। बलदेवजी कई बार रात्रि में भी गुरुकुल में ही निवास करते थे। गुरुकुलीय शिक्षा के प्रति आपका प्रेम इस सीमा तक बढ़ा कि आपने नौकरी से त्याग पत्र दे दिया और पूर्णकालिक ब्रह्मचारी वा विद्यार्थी बन गये। प्रचलित स्वभाव के अनुसार उनके परिवार को उनका नौकरी छोड़ना और घर न आना पसन्द नहीं था और वह उन्हें घर ले जाना चाहते थे। इन विघ्नों को देखते हुए आपने स्वामी ओमानन्द जी की प्रेरणा से महर्षि दयानन्द के भक्त श्री देवस्वामी जी के गुरुकुल सिरसागंज के लिए अध्ययनार्थ प्रस्थान किया और वहां संस्कृत व्याकरण के आचार्य पंण्डित शंकरदेव जी से अध्ययन किया। अध्ययन में कोई विघ्न उपस्थित न हो इसलिए आपने इस गुरुकुल में अध्ययन की जानकारी अपने परिवार को नहीं दी। इसका ज्ञान केवल स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी को ही था। गुरुकुल सिरसागंज में अध्ययन के दिनों में आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान, संन्यासी और नेता स्वामी इन्द्रवेश जी आपके साथी व मित्र हुआ करते थे। दोनों ने एक ही गुरु से शिक्षा प्राप्त की थी। आचार्य बलदेव और स्वामी इन्द्रवेश, इन दोनों ब्रह्मचारियों, ने माता–पिता की अनुमति मिलने की आशा न होने के कारण घर से भागकर गुरुकल में शिक्षा प्राप्त की थी।

महात्मा बलदेव जी नैष्ठिक ब्रह्मचारी थे। संस्कृत का सम्पूर्ण आर्ष व्याकरण आपको मृत्यु के समय तक कण्ठ था। संस्कृत व्याकरण के आप विलक्षण आचार्य थे। आर्यसमाज के क्षेत्र में गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ एक प्रसिद्ध गुरुकुल है जहां के ब्रह्मचारी विद्यार्थियों ने खेलकूद में राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अनेक पुरुस्कार प्राप्त कर देश और गुरुकुल को गौरवान्वित किया है। इस गुरुकुल के आचार्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती ने आचार्य बलदेव जी से अध्ययन किया है। जिन दिनों आप गुरुकुल झज्जर में स्वामी इन्द्रवेश जी आदि विद्वान आचार्यों से पढ़ते थे तो संस्कृत व्याकरण के अध्ययन से सन्तुष्टी न होने के कारण आपने गुरुकुल छोड़ने का निश्चय कर लिया था। आचार्य बलदेव जी को इस बात का पता लगने पर उन्होंने विवेकानन्द जी से बात की तो उन्होंने बताया कि वह अपने गुरुजनों द्वारा संस्कृत के अध्ययन से सन्तुष्ट नहीं हैं। इस पर महात्मा बलदेव जी ने कहा कि कल से मैं तुम्हें संस्कृत पढ़ाऊंगा। मैं चार बजे या इससे पहले सोकर उठ जाता हूं। यदि तुम मुझसे पहले उठ जाओ तो मुझे जगा देना अन्यथा मैं तुम्हें जगाऊंगा। इस प्रकार से प्रतिदिन चार बजे से पहले ही आचार्य बलदेव जी शिष्य विवेकानन्द जी को संस्कृत व्याकरण पढ़ाने लगे। यह क्रम चार से पांच वर्षों तक चला। इससे न केवल विवेकानन्द जी को पूर्ण सन्तोष हुआ अपितु उन्होंने संस्कृत के व्याकरण में पूर्ण अधिकार प्राप्त किया और गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ का संचालन कर वैदिक धर्म व संस्कृति सहित आर्यसमाज के गौरव को भी देश

देशानतर में स्थापित किया। **देष भर में विभिन्न स्थानों पर 8 गुरुकुलों का संचालन कर रहे आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान व संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती आचार्य बलदेव जी के ही शिष्य हैं। आपने बताया है कि आचार्यजी व्याकरण के प्रमाणित पण्डित थे। मृत्युपर्यन्त आपको व्याकरण कण्ठस्थ रहा। इस लेख की समस्त सामग्री का श्रेय भी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती व उनके सुयोग्य शिष्य आचार्य डा. धनंजय जी को है जिसे हमने दूरभाष पर उनसे प्राप्त किया है।**

आचार्य बलदेव जी ने सन् 1971 में हरियाणा के कालवां स्थान पर एक गुरुकुल की स्थापना की थी। इस गुरुकुल में उपनिषद, दर्शन व वेद आदि की योग्यता प्राप्त करने के लिए संस्कृत के आर्ष व्याकरण सहित प्रायः सभी शास्त्रों का अध्ययन कराया जाता रहा है। आज के विश्व प्रसिद्ध योग प्रचारक और पतंजलि योग पीठ के संस्थापक स्वामी रामदेव जी आपके ही गुरुकुल में आपसे सन् 1980 से 1990 के मध्य पढ़े थे। **आपके अन्य प्रमुख शिष्यों में स्वामी डा. देवव्रत जी, आचार्य डा. रघुवीर वेदालंकार, आचार्य डा. यज्ञवीर जी, स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी, स्वामी सत्यपति जी, आचार्य अखिलेश्वर जी, स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी, आचार्य विजयपाल जी व स्वयं आचार्य हरिदेव जी (स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी) आदि प्रमुख शिष्य हैं। अध्यापन का आपका प्रिय विषय संस्कृत का व्याकरण ही था। आपके प्रमुख गुरुओं में स्वामी ओमानन्द जी सहित पण्डित शंकरदेव जी, पं. राजवीर शास्त्री व डा. महावीर मीमांसक जी आदि सम्मिलित हैं।**

आचार्य बलदेव जी के निधन से आर्यजगत में सर्वत्र शोक की लहर छा गई है। आपकी अन्त्येष्टि 29 जनवरी, 2016 को दिन के 12.00 बजे दयानन्द मठ रोहतक में हुई। स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, आचार्य धनंजय आर्य गुरुकुल पौधा, श्री राजेन्द्र विद्यालंकार, श्री वाचोनिधि आर्य, डा. विवेक आर्य, श्री ऋषिदेव आर्य सहित श्री मिथलेश आर्य, श्री अजायब सिंह, श्री विकास अग्रवाल, श्री प्रवीण गुप्ता, श्री नरेन्द्र आर्य, देवेन्द्र सचदेव, श्री धर्मवीर मिरजापुर, श्री रवीन्द्र पाहुचा, श्री सौरभ चौधरी आदि अनेक लोगों ने आचार्य बलदेव जी को श्रद्धांजलि दी। स्वामी प्रणवानन्द ने उन्हें ईश्वर भक्त, वेदभक्त, दयानन्द–आर्यसमाज भक्त, सच्चा धर्म–संस्कृति का प्रेमी, आदर्श ब्रह्मचारी, संस्कृत विद्या का निष्ठावान प्रचारक, कर्मयोगी, तपस्वी व धर्म व संस्कृति का उन्नायक बताया। वैदिक साधन आश्रम तपोवन आचार्य बलदेव जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

तपोवन की गतिविधियों में समय समय पर भाग लेने व इससे गहरी सहानुभूति रखने वाले देहरादून के 106 वर्षीय आर्यपुरुष श्री ठाकुर सिंह नेगी जी का दिनांक 16 जनवरी, 2016 को देहावसान हो गया। आप आर्यसमाज, धर्मपुर, देहरादून के सक्रीय सदस्य रहे। श्री ठाकुर सिंह जी समाजसेवी व दानी प्रवृत्ति के आर्य थे। आप रेलवे विभाग में सेवारत रहे और लगभग 50 वर्ष पहले सेवानिवृत्त हुए थे। आपकी अन्त्येष्टि देहरादून के श्मशान घाट में पूर्ण वैदिक रीति से की गई। आपके निधन से आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

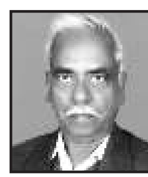

आर्यसमाज धर्मपुर, देहरादून के ही एक अन्य प्रौढ़ सदस्य श्री प्रभुदयाल जी मौर्य का दिनांक 16 जनवरी, 2016 को ही निधन हुआ। 14 नवम्बर, 1936 को जन्में श्री मौर्य जी की आयु लगभग 79 वर्ष थी। आर्यसमाज के संस्कार आपको आपके विद्यालय के गुरु मास्टर रामस्वरुप जी से मिले थे जो एक प्राइमरी स्कूल के अध्यापक होने के साथ प्रसिद्ध समाजसेवी एवं देहरादून नगरपालिका के सभापति थे और उत्तर प्रदेश विधानसभा के सदस्य भी रहे थे। आपने वुड क्राफ्ट में डिप्लोमा प्राप्त कर भारत सरकार के देहरादून स्थित वन अनुसंधान संस्थान में सेवा की और यहीं से सेवानिवृत्त थे। श्री प्रभुदयाल जी कुछ समय से रुग्ण चल रहे थे। आप सच्चे, कर्मठ एवं निष्ठावान आर्य पुरुष थे और आपका पूरा परिवार आर्य विचारधारा का निष्ठावान अनुयायी है। आपके परिवार में आपकी धर्मपत्नी श्रीमति पार्वती देवी सहित दो सुयोग्य पुत्र श्री शत्रुघ्न मौर्य व श्री राजेश मौर्य है। आपकी दो पुत्रियां श्रीमति गीता रानी व श्रीमति मंजु रानी हैं। सभी सन्तानें विवाहित हैं और सबके अपने भरे–पूरे परिवार हैं। आपके बड़े पुत्र श्री शत्रुघ्न मौर्य जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं और कई वर्षों से आर्यसमाज की प्रशंसनीय सेवा कर रहे हैं। श्री प्रभुदयाल मौर्य जी के निधन से भी आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

आर्यसमाज धर्मपुर देहरादून के ही एक अन्य कर्मठ व सिद्धान्तनिष्ठ सदस्य श्री मंगल सिंह राणा जी का दिनांक 17 जनवरी, 2016 को अल्पकालिक बीमारी के बाद निधन हो गया। आपके परिवार में आपकी धर्मपत्नी श्रीमति शोभा राणा, एक पुत्र श्री मनमोहन राणा एवं एक पुत्री का भरा पूरा परिवार है। सभी सन्ताने विवाहित हैं, भरा पूरा परिवार है एवं और विचारधारा का पालन करते हुए सुखी जीवन व्यतीत कर रहे हैं। 15 जनवरी, 1938 को जन्में श्री मंगलसिंह राणा बीटीसी उपाधि प्राप्त प्राइमरी पाठशाला में अध्यापक थे। राणा जी प्रतिदिन यज्ञ करते थे और उन्होंने महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों को अपने जीवन में धारण किया हुआ। आर्यसमाज धर्मपुर देहरादून से आप सन् 1979 में 36 वर्ष पूर्व जुड़े थे। आपके निधन से आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून सभी दिवंगत आत्माओं की शान्ति व सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। दिवंगत आत्माओं के परिवारजनों के प्रति हमारी गहरी संवेदना है और ईश्वर से प्रार्थना है कि वह दिवंगत सभी आर्यबन्धुओं के परिवार के सदस्यों के इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

Saturn Series

CPU Holder

Slide out Keyboard tray

Swivel and Tiltable keyboard tray

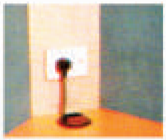

Wire Management

All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary. Any infringement is liable for prosecution.

DE BONO FLEXCOM (INDIA) LTD.: Kukreja House, 1st Floor, 46, Rani Jhansi Road, New Delhi-110055

Ph : 011-23540721, 23533936 **Fax :** 23533944 **Email :** debono@debonoindia.com

E-mail : delite@delitekom.com

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2015-17 समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

MUNJAL SHOWA मुंजाल शोवा

मुंजाल शोवा लिमिटेड देश में टू व्हीलर / फोर व्हीलर उद्योग में सभी प्रमुख ओ.ई.एम. के लिए शॉक एब्जोर्बर, फ्रंट फोर्क्स, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कंवेंशनल) और गैस स्प्रिंगो का सबसे बड़ा निर्माता है। निर्मित उत्पाद, गुणवत्ता और सुरक्षा के कड़े मानों के अनुरूप होते हैं। कम्पनी के उत्पाद बाधामुक्त, आरामदेह, चिरस्थायी, विश्वसनीय और सुरक्षित यात्रा के लिए जाने जाते हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, टीएस–16949, आईएसओ 14001, ओ.एच.एस.ए.एस. 18001 और टीपीएम प्रमाणित कम्पनी है। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

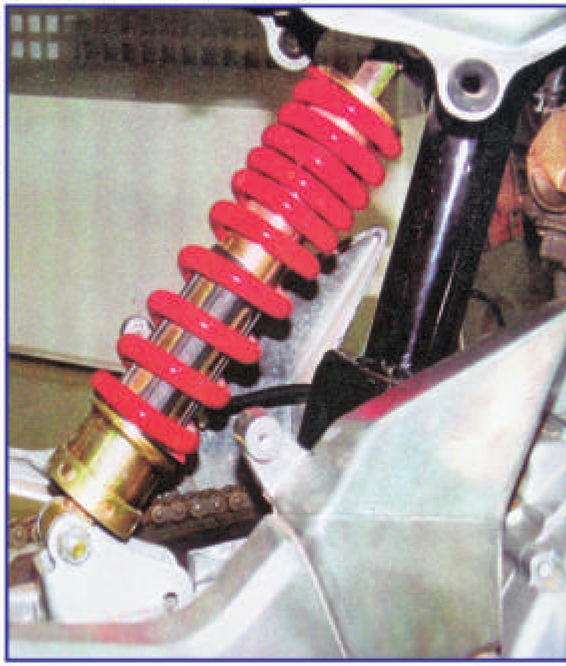

- टीपीएम प्रमाणित कम्पनी
- आईएसओ / टीएस–16949–2002 प्रमाणित
- आईएसओ–14001 एवं ओएचएसएएस–18001 प्रमाणित

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

- हीरो मोटोकोर्प लिमिटेड
- मारुती सुजुकी इन्डिया लिमिटेड
- होन्डा कार्स इन्डिया लिमिटेड
- होन्डा मोटर साइकल एवं स्कूटर इन्डिया (प्र0) लिमिटेड
- इन्डिया यामहा मोटर (प्र0) लिमिटेड

हमारा उत्पादन

- स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्कस
- गैस स्प्रिंगस / विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं0 9–11, मारुति इन्डस्ट्रीअल एरिया, गुड़गाँव। दूरभाषः 0124–2341001, 4783000, 4783100
प्लॉट नं0 26 इ एवं एफ, सेक्टर–3, मानेसर, गुड़गाँव। दूरभाषः 0124–4783000, 4783100
प्लॉट नं0 1, इन्डस्ट्रीअल पार्क–2, सालेमपुर गाँव, मेहदूद–हरिद्वार, उत्तराखण्ड दूरभाषः 0124–4783000, 4783100

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित। संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com